जून 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

इस टेपरिकॉर्ड (मशीन) को जगत् के लोग ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड कहते हैं। लेकिन दिस इज़ नॉट ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड। यह (जो वाणी) बजती है, वह ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड है और यह टेपरिकॉर्ड (मशीन) वह सेकन्डरी टेपरिकॉर्ड है। यानी इस ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड (वाणी) पर से दूसरी टेप होती है।

यु.के. शिबिर : ता. 8 से 12 अप्रैल 2026

जर्मनी अक्रम विज्ञान इवेन्ट : ता. 15 से 21 अप्रैल 2026

वर्ष : 21 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 248
जून 2026
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए: +91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

शब्दों के असर से मुक्त रहने की कुंची

संपादकीय

मनुष्य जीवन में वाणी वह लोक व्यवहार का मुख्य माध्यम है। वह कभी संबंधों को जोड़ती है, तो कभी तोड़ती भी है। खास तौर पर कड़वी वाणी या अपमानजनक शब्दों से हृदय में गहरे घाव पड़ते हैं, जो सालों तक भरते नहीं हैं। जगत् शब्दों के असर से ही खड़ा हुआ है। जब कोई कहता है कि 'आपमें अक्ल नहीं है', तब हम पर अपमान का असर हो जाता है, क्योंकि हम अंदर 'मैं अक्लमंद हूँ', ऐसी मान्यता दृढ़ करके बैठे हैं। इस तरह, अपमान के दु:ख का मूल कारण हमारी अज्ञान मान्यताएँ ही हैं।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि कई बार हमें नहीं बोलना हो तो भी भूल से बोल दिया जाता है और कई बार हमने जो बोला हो उसे फिर से बोलने को कहें तो फिर से नहीं बोल पाते। तब हमें सोचना चाहिए कि यह नहीं बोलना था, वह कौन कहता है? जिसने बोला वह कौन है? तू कौन है? कैसे बोला गया? वास्तव में उसका भान ही नहीं है! इसकी खोजबीन तो करनी पड़ेगी न! इसका भेद जान जाए कि 'मैं कौन हूँ' और 'यह सब क्या है,' यह चेतन का भाग और यह जड़ का भाग, इन दोनों के बीच लाइन ऑफ डिमार्केशन डल जाए, तब यह पज़ल सॉल्व होता है।

वाणी, वह टेपरिकॉर्ड है। इस टेपरिकॉर्ड का सर्जन कैसे हुआ? बनानेवाला कौन है? क्या यह सब ऑटोमेटिक होता है? 'आत्मा' को कुछ करना नहीं पड़ता, उसकी उपस्थिति से यह टेपरिकॉर्ड उतरती है, 'खुद का' क्या करने का आशय है, उस संज्ञा पर से कोडवर्ड हो जाता है। 'मुझे सामनेवाले को यह बात समझानी है' ऐसा भाव उत्पन्न होता है, उसे भावसंज्ञा कहते हैं। यह भाव उत्पन्न हुआ कि उसके साथ तुरंत ही कोडवर्ड अपने आप ही *पुद्गल* में तैयार होता रहता है। कोडवर्ड में से फिर उसका शॉर्टहेन्ड होता है और फिर सभी को समझ में आए ऐसी भाषा में यह वाणी निकलती है।

यह विज्ञान सिर्फ समझ-समझ करना है! सिर्फ तीर्थंकर ही जानते थे कि यह टेपरिकॉर्ड बोल रही है। वही बात दादाश्री ने उजागर की है। एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जो खुद अपनी स्वतंत्र शक्ति से बोल सके। खुद के शब्दों को और सामनेवाले के शब्दों को 'रिकॉर्ड' मानेंगे तो हल आएगा, अन्य कोई उपाय इस जगत् को जीतने का नहीं है। 'रिकॉर्ड' कहा इसलिए निर्दोष हो गए! यह टेपरिकॉर्ड बजती है यानी मालिकी रहित वाणी है! यानी 'मैं नहीं बोलता', यही उसका अर्थ हुआ! अपमान के सामने 'वाणी, वह टेपरिकॉर्ड है' ऐसा दृढ़ता से समझ में आ जाए, यह जो बोल रहा है वह व्यवस्थित है, फाइल का समभाव से *निकाल* करना है। ये सारी वैज्ञानिक चाबियाँ लगाकर महात्माओं को बिना किसी भी असर के निरंतर समाधि का अनुभव हो जाए, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

शब्दों के असर से मुक्त रहने की कुंची

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अंदर मान बैठने की असर

कोई कहेगा कि ‘इन चंदूभाई में अक्ल नहीं है’, तो आप पर कोई असर होगा क्या?

प्रश्नकर्ता : होगा तो सही न!

दादाश्री : क्यों? अक्ल के बोरे हो आप?

प्रश्नकर्ता : नहीं है इसीलिए हो जाएगा।

दादाश्री : और कोई कहे कि ये चंदूभाई कहाँ के कलेक्टर हैं? तब क्या आप ऐसा कहोगे कि मैं कलेक्टर हूँ?

प्रश्नकर्ता : नहीं है तो कैसे कहेंगे?

दादाश्री : तब फिर, इसका असर नहीं होता कलेक्टर कहने से, और इसका असर क्यों हो जाता है? आप अंदर मान बैठे हो कि मैं कुछ हूँ, अक्लवाला हूँ।

जगत् शब्दों के असर से खड़ा है

हम सुख में बैठे हों और कोई आकर कुछ कहे, ‘आपमें अक्ल नहीं है’ इतना बोले कि हो गया, खत्म! अब उसने कोई पत्थर मारा है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : शब्द ही हैं। पत्थर मारा हो तो हम समझ सकते हैं कि उनको यहाँ पर लगा इसलिए उन्हें जलन हो रही है। लेकिन यह तो बिना पत्थर के ही लगा।

प्रश्नकर्ता : शब्दों में इतना अधिक असर होता है?

दादाश्री : यह सारा उसी का असर है। शब्दों का ही असर है। जगत् में छाती पर (शब्दों के) घाव लगते, वे सौ-सौ जन्मों तक नहीं जाते। ‘छाती पर घाव लगे हैं, ऐसा बोले हो’, कहते हैं। असर ही है यह! जगत् शब्द के असर से ही कायम है।

वाणी ही मुख्य आधार

वाणी से तो सारी झंझट है। वाणी के कारण ही तो ये सारी भ्रांति जाती नहीं हैं। कहता है कि ‘यह मुझे गालियाँ देता है।’ और इसलिए फिर बैर जाता ही नहीं न! वाणी के कारण ही यह जगत् खड़ा रहा है। यदि वाणी नहीं होती तो यह जगत् ऐसा नहीं होता। अर्थात् वाणी ही मुख्य आधार है।

प्रश्नकर्ता : इतने सारे झगड़े होते हैं, गालियाँ दें तो भी लोग मोह के कारण सारा भूल जाते हैं और मुझे तो दस वर्ष पहले कहा हुआ हो तो भी *लक्ष* में रहता है। और फिर मैं उसके साथ (व्यवहार) कट कर देता हूँ।

दादाश्री : पर मैं कुछ अलग नहीं कर देता। हम जानते हैं कि इसकी *नोंध* (अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना, नोट करना) रखने जैसी नहीं है। रेडियो बजता हो ऐसा मुझे लगता रहता है। उपर से मन में हँसी आती है।

उसे मैं दिखाता नहीं, वर्ना वह फिर से चिढ़ेगा। लेकिन मन में हँसी आती है कि यह रेडियो कैसा बज रहा है! वह गालियाँ दे रहा हो तब भी मुझे ऐसा लगता रहता है कि ये तो सभी रेडियो ही हैं।

वह खोजबीन तो कर

मनुष्य ऐसा कहता है न, कि 'मुझे नहीं बोलना था, फिर भी बोला गया?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी ऐसा होता है।

दादाश्री : और फिर से वापस कहता है न, कि 'ऐसा नहीं, ऐसा, ऐसा?' नहीं बोलना था फिर भी बोला गया, उसका क्या करें? बोले बिना कोई चारा ही नहीं है न? तो भीतर दो व्यक्ति कौन हैं बोलनेवाले?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, एक ही है।

दादाश्री : बोलता है और फिर कहता है 'अरे भाई, मेरी भूल हो गई। मैंने भूल से बोल दिया।' अरे, तू बोलनेवाला और फिर भूल से बोल गया वह शब्द? तब तू बोला या कोई और बोला? तू नहीं था तो बोलनेवाला कौन था? यह नहीं बोलना था ऐसा कौन कहता है? जिसने बोला वह कौन है? तू कौन है? किस तरह बोला गया? यह सब खोज न, थोड़ी खोजबीन तो कर। अरे, यदि तू ही बोलनेवाला हो तो ऐसा नहीं हो सकता। तू खुद बोलता हो तो ऐसी दो भाषाएँ नहीं बोलता। अभी तक तुम बोलते थे और अब बोला गया? तो क्या न्यूट्रल हो, इसलिए ऐसा कहते हो कि 'बोला गया'? यह सब सोचा क्या?

और बाद में पछतावा भी होता है। खुद बोलता है फिर कहता है कि, 'भाई, मुझसे यह भूल से बोला गया। भूल से बोला गया।' तब पछतावा कौन करता है? यह कौन बोलता है? इसके पीछे क्या रहस्य है? इसका पृथक्करण करें तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : ऐसा क्यों बोला गया?

दादाश्री : उसका कारण, यह टेपरिकॉर्ड है। जैसी टेप हुई है न, वैसी निकलती है। खुद के हाथ में नहीं है यह तो। वह खुद बोलता ही नहीं है, टेपरिकॉर्ड बजती है। वर्ना मनुष्य को फिर से कहना नहीं पड़ता कि मेरी भूल हो गई। हमेशा तू खुद बोलनेवाला हो तो भूल हो ही नहीं सकती और भूल होती है तो तू खुद बोलनेवाला नहीं है। ये तो सारी टेपरिकॉर्ड भीतर उतर चुकी है।

वाणी मात्र निश्चेतन

'वाणी वह रिकॉर्ड स्वरूप है' ऐसा स्पष्टीकरण करनेवाले हम ही हैं! वाणी, वह टेपरिकॉर्ड ही है। जीवमात्र बोलता है, वह टेपरिकॉर्ड है। गधा रेंकता है, वह भी टेप है और ये लोग बोलते हैं, वह सब भी टेपरिकॉर्ड है। इसमें जीव नहीं है, चेतन नहीं है। सारी वाणी मात्र निश्चेतन है। वाणी चेतन है ही नहीं।

वाणी जड़ है, रिकॉर्ड ही है। यह जो टेपरिकॉर्ड बजती है, उसकी पहले टेप उतरती है या नहीं? उसी प्रकार इस वाणी की भी पूरी टेप उतर चुकी है। उसे संयोग मिलते ही, जैसे पिन लगे और रिकॉर्ड शुरू हो जाती है, वैसे ही वाणी शुरू हो जाती है और वह अक्करमी कहता है कि 'मैं बोला!' 'अरे, तू नहीं बोलता। वह तो रिकॉर्ड बजती है।' अरे, यदि तय करके बोलने जाए तो एक अक्षर भी नहीं निकलेगा।

ये सभी लोग जो वाणी बोल रहे हैं वह सारी रिकॉर्ड ही बोल रही हैं। एक भी व्यक्ति ऐसा पैदा नहीं हुआ है कि जो खुद अपनी स्वतंत्र शक्ति से बोल सके। यह मैं जो बोल रहा हूँ वह

भी रिकॉर्ड ही है न, इसलिए इस पर से ये टेपरिकॉर्ड (केसेट) बनती है। हमेशा, जो टेपरिकॉर्ड बनती है, वह चीज़ पहले रिकॉर्ड हो जाती है। इसलिए सभी लोगों की वाणी रिकॉर्ड है।

पूर्व जन्म में भरी हुई रिकॉर्ड निकले आज

कई बार ऐसा होता है या नहीं कि आपने दृढ़ निश्चय किया हो कि सास के या पति के सामने नहीं बोलना है, फिर भी बोल दिया जाता है या नहीं? बोल दिया जाता है। वह क्या है? आपकी तो इच्छा नहीं थी। तब क्या पति की इच्छा थी कि पत्नी मुझे गाली दे? तब कौन बुलवाता है? वह तो रिकॉर्ड बोलती है और जो रिकॉर्ड बन गयी है उसे तो कोई बाप भी बदल नहीं सकता।

कई बार कोई मन में तय करके आया हो कि आज तो फलाने को ऐसा सुनाऊँगा और वैसा बोल दूँगा। पर जब उसके पास जाता है और दूसरे दो-पाँच लोगों को देखता है तो एक अक्षर भी बोले बगैर वापस लौट जाता है कि नहीं? अरे, बोलना चाहता है, मगर बोलती बंद हो जाती है (बोल नहीं सकता)। ऐसा होता है कि नहीं? यदि तेरी सत्ता की वाणी होती, तो तू चाहे वैसी वाणी निकलती। पर ऐसा होता है क्या? कैसे होगा?

यह तो रिकॉर्ड ही बोलती है

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, लेकिन यह सजीव सृष्टि बोलती है, यह बात सही है न? मानव सृष्टि बोलती है, यह बात तो पक्की है न?

दादाश्री : 'बोला' किसे कहेंगे कि, खुद को जैसा बोलना हो और जितना बोलना हो उतना ही बोला जाए। लेकिन ऐसा बोलते हैं क्या? ऐसा होता है क्या पूरे दिन में? आपको बोलना हो क्या और क्या बोला जाता है ऐसा होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : ज़रूरत से ज्यादा बोल दिया जाता है या तो नहीं भी बोला जाता है!

दादाश्री : क्या बोलना हो और उसके बजाय कैसा बोला जाता है, ऐसा होता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा होता ही है।

दादाश्री : रोज़?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रोज़!

दादाश्री : तो फिर यह बोलनेवाला मनुष्य हो तो एक वाक्य भी अलग नहीं होना चाहिए। कभी बोलने के बाद मन में ऐसा हुआ कि यह भूल से बोला गया, ऐसा पता चला? तब तुम बोलनेवाले थे फिर भी उल्टा शब्द कैसे निकला? इसलिए तुम बोलनेवाले होकर भी नहीं बोलते, अपने आप निकलता रहता है।

हम भी एक अक्षर भी नहीं बोले हैं और बोलने की शक्ति ही नहीं है किसी में!

प्रश्नकर्ता : खुद यदि बोलता हो तो जैसा चाहे वैसा बोल सकता है न!

दादाश्री : हाँ। लेकिन यह खुद बोलता ही नहीं है। वाणी बोलने की सत्ता भी खुद के हाथ में नहीं है। वर्ना तूने कब की बंद कर दी होती। लेकिन तेरे हाथ में नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : महापुरुषों का तो वाणी पर अधिकार होता है न?

दादाश्री : महापुरुषों का वाणी पर बिल्कुल भी अधिकार नहीं होता। वे तो मन में अहंकार करते हैं कि 'मैं बोला'।

कुछ लोग मेरे बारे में उल्टी बात करते हैं तो फिर मैं उन्हें थोड़ी देर बार कहता हूँ, 'तूने जो बोला, वह फिर से बोल ज़रा!' तब वह

कहता है, 'वह तो नहीं आएगा'। तब क्या देखकर बोलता है? लट्टू है या क्या है तू? तुझे एक अक्षर का भी *भान* नहीं है, कि क्या बोलता रहता है? लो जितना बोला वैसा फिर से बोलना नहीं आता? ऐसा एक अक्षर भी नहीं बोल सकते! 'कौन बोलता है' उसका *भान* ही नहीं है!

लोग तो क्या कहते हैं? 'मैं बोला।' ऐसा बोलते हैं न? वे तो ठोकाठोक निराधार बोलते हैं, बेवजह! क्या ऐसा अंधेर चलता होगा भला? जगत् में अंधेर नहीं है। हम दस मिनट बातें करें और फिर हम उनसे कहें कि, 'फिर से बोलो ज़रा, जो बोला था वह! फिर से बोलो ज़रा!' तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं बोल सकते।

दादाश्री : नहीं आएगा। वही का वही एक अक्षर भी नहीं आएगा। क्यों? तो वह टेपरिकॉर्ड है! टेपरिकॉर्ड हो तभी फिर से नहीं बोल सकते। टेपरिकॉर्ड बज गई। अपने हाथ में सत्ता ही नहीं है न! यह तो मैं खुद देखकर कहता हूँ। यह तो पूरा साइन्स है।

परिणाम स्वरूप टेपरिकॉर्ड वही प्रमाण

एक लॉज़िक के प्रोफेसर ने मुझसे पूछा, कि 'यह एक्ज़ेक्टली टेपरिकॉर्ड है या इन लोगों को शांत करने के लिए कहते हैं? दूसरे लोग उसे गलत न समझें इसलिए न?' मैंने कहा, 'नहीं, एक्ज़ेक्टली टेपरिकॉर्ड ही है। हम गलतफहमी हो ऐसा नहीं कह सकते। गैरजिम्मेदारीवाला शब्द हमारा नहीं होता कोई। गैरजिम्मेदारीवाला को लोग नियम मान लेंगे। हम जो शब्द बोलते हैं, उसे लोग नियम ही मानते हैं। इसलिए गैरजिम्मेदारीवाला तो हमसे बोला ही नहीं जाएगा।' उन्होंने कहा, तो आप गैरजिम्मेदारीवाला नहीं बोलते?' मैंने कहा, 'नहीं।' तब वे कहते हैं, 'लेकिन ऐसा होता होगा? यह टेपरिकॉर्ड तो क्या बोलती होगी?' मैंने कहा, 'तो (और कौन बोलता होगा?) क्या है?' तब वे कहते हैं, 'नहीं, वे तो बोलते ही हैं सभी।' मैंने उनसे कहा, 'आप लॉजिक के प्रोफेसर होकर ऐसा बोल रहे हो?' तब वे कहते हैं, 'एक बड़े फिलॉसोफर थे। वे दो घंटे तक भाषण देते थे। वे कितना ज़्यादा बोलते थे!' मैंने कहा, 'वह टेपरिकॉर्ड बजती है। वे तो अहंकार करते हैं इतना ही, कि 'मैं बोला'। तब वे कहते हैं, 'लेकिन टेपरिकॉर्ड बजती है उसका क्या प्रमाण है आपके पास?' तब मैंने कहा, 'उन्होंने बोला, वह परिणाम था या कॉज़ थे?' तब वे कहते हैं, 'परिणाम था।' तब मैंने कहा, 'परिणाम' में कोई कुछ कर सकता है क्या?' तब वे कहते हैं, 'नहीं कर सकता।' तब मैंने पूछा, 'तो भी क्या यह टेपरिकॉर्ड बजती है ऐसा मानने में नहीं आता?' तब वे कहते 'लेकिन वाणी को टेपरिकॉर्ड नहीं मान सकते। वे बोलते हैं, हम बोल सकते हैं, इसलिए वाणी को हम टेपरिकॉर्ड नहीं मान सकते।' दूसरा मैंने कहा, 'वे तत्त्वचिंतक जो बोले थे, उनसे हम कहें कि वही का वही फिर से बोलो। तो वे बोलेंगे क्या?'

प्रश्नकर्ता : नहीं बोलेंगे, एक्ज़ेक्ट नहीं निकलेगा वैसा।

दादाश्री : वैसा कुछ भी नहीं निकलेगा, वह तो बिल्कुल अलग ही वाणी निकलेगी। जैसी टेपरिकॉर्ड बजी थी, वैसी नहीं निकलेगी। या फिर दस प्रतिशत गलतीवाली भी नहीं निकलेगी। कुछ अलग ही प्रकार की निकलेगी इसलिए यह टेपरिकॉर्ड बजती है, एक्ज़ेक्टली टेपरिकॉर्ड ही है।

इसलिए मैंने खुले आम पूरे वर्ल्ड को कहा है कि यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड बज रही है। ये

सारे ही रेडियो हैं। कोई मुझे साबित कर दे कि 'यह टेपरिकॉर्ड नहीं है' तो यह (हमारा) पूरा ज्ञान ही गलत है।

यह भूल कैसे समझ में आए?

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहते हैं कि यह टेपरिकॉर्ड बजती है। वह आप वास्तव में क्या कहना चाहते हैं? इसे ज़रा समझाइए।

दादाश्री : मालिकी रहित वाणी! यानी 'मैं नहीं बोलता' यह उसका अर्थ है! हमने क्या कहा है? बोलनेवाले का तू जाननेवाला रहा, तो तू छूट गया और बोलनेवाले का जाननेवाला नहीं रहा, लेकिन प्रतिक्रमण किया तब भी तू छूट गया।

मालिकी रहित वाणी वही इस दुनिया में सुनने जैसी है। मालिकी रहित वाणी तो आज सुनने को मिली आपको। मालिकी रहित वाणी यदि तुमने सुनी हो तो वह यहीं पर है।

पूरी दुनिया में ढूँढ निकालो कि मालिकी रहित कोई वाणी है? क्योंकि इस वाणी मात्र का हर कोई मालिक होता है। 'मैंने बोला, मैंने। हमने बोला, हमने किया। उसमें क्या भूल है हमारी?' ऐसा ही बोलते हैं न? तो हम पूछें कि, 'साहब, यह आप बिल्कुल सही क्रमानुसार कहते हो कि आप ही बोलते हो? तब वे कहते हैं, 'इसमें भूल ही नहीं है'। अब उसे पता नहीं कि खुद बोलता है या यह टेपरिकॉर्ड बजती है! यह कैसे पता चले?

अत: इस वाणी के कारण ही सब रूका हुआ है। 'विचार' को तो समझ गए हैं कि 'यह मन तो फिज़िकल है', ऐसा समझते हैं कई लोग। यह वाणी की ही झंझट है। 'यह शरीर अलग है', ऐसा भी जानते हैं। अत: वाणी वह टेपरिकॉर्ड है, ऐसा यदि समझ में आ जाए तो हल आ जाएगा।

हमने तो यह तुम्हें शॉर्ट में दे दिया है। लेकिन विस्तारपूर्वक तुम्हें जान लेना है। पूछने में क्या हर्ज़ है? और यह रिकॉर्ड दरअसल हंड्रेड परसेन्ट फेक्ट दे, ऐसी चीज़ है। इसलिए लाभ ले लो। यहाँ ऐसा कुछ नहीं है कि ऐसा पूछ सकते हैं या ऐसा नहीं पूछ सकते। पूछो तो खुलासा होगा। इसमें कहीं किसी प्रकार का नुकसान होनेवाला नहीं है।

ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड का साइन्स

प्रश्नकर्ता : टेपरिकॉर्ड का सोर्स, उसका मूल अंदर होता है या बाहर होता है?

दादाश्री : अंदर ही टेपरिकॉर्ड है। टेपरिकॉर्ड अंदर होती है और बाद में बाहर प्रकट होती है। अंदर ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड है।

प्रश्नकर्ता : यह ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड, यह शब्द बोलते हैं, इसमें 'ओरिजिनल' क्यों कहते हैं?

दादाश्री : इस टेपरिकॉर्ड (मशीन) को जगत् के लोग 'ओरिजनल टेपरिकॉर्ड' कहते हैं। लेकिन दिस इज़ नॉट ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड। यह जो बजती है, वह ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड है और यह टेपरिकॉर्ड (मशीन) वह सेकन्डरी टेपरिकॉर्ड है। ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड वह सूक्ष्म है और बाहर सारी स्थूल है। इस पर से दूसरी टेप होती है। अत: यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड है, ऐसा कहना चाहता हूँ। यदि यह दूसरी टेप नहीं होती, तो हम इसे ओरिजनल टेपरिकॉर्ड कह ही नहीं सकते थे। जबकि यह तो दूसरी टेप होती है, उस पर से तीसरी टेप होती है, जितनी टेप करनी हों, उतनी टेप होती हैं। इसलिए यह जो टेपरिकॉर्ड बजती है, वही ओरिजनल टेपरिकॉर्ड है। इससे पहले टेपरिकॉर्ड है ही नहीं।

कोई भी चीज़ ओरिजनल के बिना नहीं

होती। यह साइन्स के रिवाज अनुसार आपको समझ में आता है या समझ में नहीं आता? साइन्स का रिवाज तो है न?

यह टेपरिकॉर्ड ही बोल सकती है। आत्मा की वाणी हो न, तो टेपरिकॉर्डर में टेप नहीं उतरती। यह टेपरिकॉर्ड की वाणी है, इसलिए टेपरिकॉर्डर में टेप होती है।

टेप (वाणी) : टेप (मशीन)

यहाँ यह टेपरिकॉर्डर (मशीन) कौन बजाता है?

प्रश्नकर्ता : यह तो विज्ञान है।

दादाश्री : यह भी विज्ञान ही है। यह अंदर पूरा विज्ञान ही है। सबसे पहला साइन्स यहीं इस बॉडी में ही है। इस पर से बाहर का साइन्स उत्पन्न हुआ है।

प्रश्नकर्ता : वाणी के मालिक नहीं है, तो फिर यह कैसे बोली जाती है?

दादाश्री : इस टेपरिकॉर्डर (मशीन) का मालिक नहीं हो, फिर भी यह बजता ही है न! जैसे यह टेपरिकॉर्डर (मशीन) बजता है न, उसी तरह यह ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड भी बजती है। इसमें और कोई फर्क नहीं है ज़रा भी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह टेपरिकॉर्डर (मशीन) तो 'मेन मेड' (मनुष्य ने बनाई) मशीन है।

दादाश्री : तो मशीन के अलावा और कोई बोल ही नहीं सकता न! मशीन ही बोल सकती है। बोलती है, वह मिकेनिकल चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : यह टेपरिकॉर्डर (मशीन) वह तो 'मेन मेड' मशीन है। तो यह अंदर की किसने बनाई?

दादाश्री : यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड कुदरती है।

प्रश्नकर्ता : इस टेपरिकॉर्डर (मशीन) में बात करने की स्वतंत्रता नहीं है, यह तो यांत्रिक है।

दादाश्री : उसी तरह यह भी यंत्र ही बोल रहा है। आपने पढ़ाई की, वह भी यंत्र ने ही पढ़ाई की है। इसमें चेतन ने कुछ कार्य किया ही नहीं है। यानी मिकेनिकल ही बोलता है वह। वह मशीनरी है। यह वाणी वह 'टेपरिकॉर्ड है ऐसा जब समझ में आ जाता है न, तब कल्याण हो जाता है।

वह सर्जन, वैज्ञानिक प्रयोग

प्रश्नकर्ता : इस (वाणी रूपी) टेपरिकॉर्ड का सर्जन किस तरह से हुआ? बनानेवाला कौन है? ऑटोमैटिक हुआ?

दादाश्री : कोई बनानेवाला नहीं है, सब ऑटोमैटिक होता है। यह सारा सर्जन भी ऑटोमैटिक होता है। वैज्ञानिक प्रयोग है अंदर और यह सब कुदरती रूप से हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : 'यह टेपरिकॉर्डर मशीन है, इसमें पहले कोई स्वतंत्र रूप से बोला हो, उसके आधार पर ही टेप होता है। तो यह भी ऐसा कुछ पहले बोला हो तो फिर यहाँ भीतर से बजेगा न? यानी टेप तो करना पड़ता है न?

दादाश्री : हाँ, यह सब टेप होता है वहाँ देखने जैसा है। ये सारी सूक्ष्म बातें हैं। वहाँ की क्रिया किस प्रकार से होती है, वह बहुत जानने जैसा है। वाणी, वह अलग चीज़ है। वाणी ओरिजनल टेपरिकॉर्ड के तौर पर है लेकिन उस ओरिजनल टेपरिकॉर्ड में आया कहाँ से? वह टेपरिकॉर्ड चीज़ खुद अपने आप तो बोल नहीं सकती न! कहीं से आना चाहिए न? आत्मा की

उपस्थिति से यह टेपरिकॉर्ड टेप होती है। वह किस तरह से टेप होती है, वह मैं जानता हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह मूल वाणी कहाँ से आई?

दादाश्री : वह मूल वाणी अज्ञानता में से उत्पन्न होती है। स्वरूप की अज्ञानता है तब तक वाणी उत्पन्न होती है। अज्ञानता में संयोगों के अनुसार, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) के आधार पर यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड बनी। लेकिन अभी इस भ्रांत दशा में किस तरह से टेप होता है, वह जानने जैसा है।

संज्ञा में से कोडवर्ड

प्रश्नकर्ता : टेप किस तरह रिकॉर्ड होती है, वह विस्तारपूर्वक समझाइए।

दादाश्री : आत्मा एक अक्षर भी बोल सके, ऐसा है ही नहीं। तब फिर वाणी कैसे निकलती है? यह विशेषभाव उत्पन्न हुआ है। आत्मा और *पुद्गल,* इन दोनों के इकट्ठा होने से यह विशेषभाव उत्पन्न हुआ है। यह विशेषभाव क्यों उत्पन्न हुआ है? खुद ऐसा करता नहीं है। लेकिन दूसरे साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स इकट्ठे हो गए हैं। यह अज्ञान दशा है न, उस अज्ञान दशा से विशेष भाव उत्पन्न होते हैं। जैसे लोहे पर ज़ंग लगता है, उसमें लोहा ज़ंग नहीं लगाता, बाहर के इन दूसरे संयोगों की वजह से है। उसी तरह यह विशेषभाव होता है। उस विशेषभाव से बाद में यह धीरे-धीरे संज्ञा के रूप में सूचित करता है। संज्ञा में से ऐसे होते-होते कोडवर्ड तैयार होता है। खुद संज्ञा से बताने जाता है। वह देह की संज्ञा इसमें नहीं होती, भीतर खुद की भावसंज्ञा होती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह संज्ञा कैसे होती है? वह आत्मा करता है क्या?

दादाश्री : आत्मा की उपस्थिति से अहंकार के भाव और बुद्धि के भाव होते हैं। वे जो भाव होते हैं, उन्हें संज्ञा कहते हैं। सबसे पहले संज्ञा पर से पूरी टेप बनती है। बाद में टेप बाहर आती है यह। वैसे तो संज्ञा 'वहीं से' प्राप्त हुई है परंतु आत्मा तो शुद्ध ही है, स्वभाव से ही शुद्ध है।

वह भाषा संज्ञा के रूप में

प्रश्नकर्ता : मूल वाणी कैसे टेप होती है, उसका हमें ख्याल आता है या नहीं?

दादाश्री : यों वह ख्याल में नहीं आता। बाकी, मूल वाणी होती ही नहीं है, मूल तो खुद की संज्ञा है। वाणी, वह परिणाम है।

प्रश्नकर्ता : संज्ञा अर्थात् क्या?

दादाश्री : सिर्फ संज्ञा ही है। जैसे गूँगा व्यक्ति होता है, वह 'ऐसा' हाथ करता है। दूसरा गूँगा व्यक्ति होता है, वह 'ऐसा' हाथ करता है। हम समझते हैं कि उन दोनों ने कुछ नहीं बोला है। लेकिन बाद में हम पता लगाते हैं, तब वे दोनों व्यक्ति स्टेशन पर आमने-सामने इकट्ठे हो जाते हैं। उन्होंने क्या बात की उसका हमें क्या पता चले? हमें पता नहीं चलता। वह तो संज्ञा से उनकी भाषा में बात की। उसी तरह अंदर गूँगे की भाषा जैसी भाषा चलती है। उस पर से यह टेप बाद में बाहर निकलती है।

कोडवर्ड बने पुद्गल में

यह रूपी तत्त्व ऐसा है कि इस तरफ 'खुद' ज़रा सी संज्ञा करे तो यह रूपी तत्त्व तुरंत वैसा उत्पन्न हो ही जाता है। जैसे यह टेलीविज़न आता है न, उसमें सब होता है न? जैसे वेव (wave) का असर उसमें होता है न? उसी तरह इसमें अपने आप असर हो ही जाता है। 'आत्मा' को कुछ करना नहीं पड़ता। 'खुद का' क्या करने

का आशय है, उस संज्ञा पर से कोडवर्ड हो जाता है। वह संज्ञा देखकर और संज्ञा पकड़कर कोडवर्ड हो जाता है, उस *पुद्गल* में, परमाणु में। वह खुद नहीं बोलता, लेकिन 'मुझे उसे ऐसा कहना है, सामनेवाले को यह बात समझानी है', ऐसा भाव उत्पन्न होता है। वह भी शब्द नहीं है। भाव उत्पन्न हुआ न, उसे 'भावसंज्ञा' कही है। वह भाव उत्पन्न हुआ कि उसके साथ तुरंत ही कोडवर्ड अपने आप ही *पुद्गल* में तैयार होता रहता है। आपको कोर्ट में अच्छी तरह प्लीडिंग करनी हो तो आपका वह कोडवर्ड वैसा छप जाता है। उसके बाद अच्छी तरह प्लीडिंग होती है। 'मुझे केस लड़ना है, झूठे केस जीतने हैं', ऐसा भाव हो जाए तो वैसी टेप तैयार हो जाती है। और फिर वह वैसा बोलता है, तो फिर लोग कहते हैं, 'क्या ब्रेन है उसका!' अरे, नहीं है ब्रेन! यह तो टेपरिकॉर्ड बोलती है। आपने ऐसा भाव तय किया हो कि 'मुझे ऑफिसर को धोखा देना है', ऐसा भाव तय किया हो तो उसी तरह टेप हो जाती है, यानी भाव के अनुसार टेप तैयार हो जाती है। बाकी उसे कोई हर एक शब्द टेप नहीं करना पड़ता।

कोडवर्ड में से शॉटहेन्ड

यह अहंकार है न, वह आत्मा की उपस्थिति में जो भी कुछ बोलने के प्रयत्न करता है, वह टाइप हो जाता है। वह भाषा हमें समझ में नहीं आती, लेकिन वह टाइप में समझ में आ जाती है। टाइप होने के बाद वह भाषा ऐसी सूक्ष्म भाषा होती है, बहुत सूक्ष्म होती है। सूक्ष्म यानी आवाज़ में लो (धीमी) नहीं, समझ में बहुत यों जल्दी नहीं आती। आपके कोई साहब हों, वे आपको कोई बात बताना चाहते हों, तो वे यों डिटेल में बोले हों, लेकिन उसे थोड़े में लिख दें, ऐसा कुछ होता है न? तुम उसे समझकर और इस तरह उसे शॉर्टहेन्ड में लिख सकते हो या नहीं लिख सकते? उस शॉर्टहेन्ड का कोडवर्ड भी होता है। उसमें से फिर 'लेन्थी' (डिटेल) लिखना हो तो वापस लिखा जा सकता है न? मूल विवरण लिखा जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है।

दादाश्री : उसी तरह यह बिल्कुल थोड़े में बोलता है। यानी वास्तव में बोलता नहीं, परंतु उसकी संज्ञा आती है और उसमें से यह टाइप हो जाता है और वह टाइप हुआ कि आगे टेप चलती रहती है।

प्रोसेस, संज्ञा में से शब्द तक की

मूल आत्मा को कुछ लेना-देना नहीं है। विशेषभाव को लेकर इस तरफ *पुद्गल* में कोडवर्ड तैयार होते हैं। कोडवर्ड तैयार होकर और फिर शॉर्टहेन्ड होता है। कोडवर्ड में से शॉर्टहेन्ड होता है तब भी कोई शब्द नहीं होता, शब्दरूप नहीं होता, वाणी के रूप में नहीं होता। आवाज़ के रूप में ही है, वह सिर्फ आवाज़ ही होती है। और जब यहाँ से गले से निकलती है न, तब शब्द के रूप में निकलती है। कंठस्थ, तालुस्थ, गला, जीभ, होंठ ये इतनी सारी मशीनरी द्वारा निकलती है तब वह शब्द के रूप में होती है। यानी यथार्थ वाणी के रूप में बजती है, सामनेवाले को समझ में आ जाए ऐसा बोला जाता है। वह आवाज़ जब इस तरह सब जगह से टकरा-टकराकर भाषा द्वारा निकलती है, तब वह सामनेवाला व्यक्ति कैच-अप कर सकता है, ग्रास्पिंग कर सकता है और सामनेवाला व्यक्ति जब सुनता है तब संज्ञा के तौर पर वापस उस तक पहुँचती है। उसके आत्मा की आवाज़ के तौर पर नहीं पहुँचती। यहाँ से निकलती है संज्ञा के तौर पर और वहाँ संज्ञा के तौर पर पहुँचती है।

यानी संज्ञा से सबसे पहले क्या होता है? कोडवर्ड हो जाता है और कोडवर्ड में से फिर शॉर्टहेन्ड होता है और शॉर्टहेन्ड में से फिर यह टेप निकलती रहती है। अर्थात् तीसरी स्थिति इस टेपरिकॉर्ड की है। अत: कितना अच्छा वैज्ञानिक तरीका है यह! अंदर की बनावट देखें न, तो भी बहुत हो गया।

वह 'आत्मा' जानने जैसा

आत्मा ऐसा नहीं है कि शब्द बोल सके। अत: खुद का जो भाव है उस भाव में सबकुछ आ जाता है, वे सारे शब्द आ जाते हैं। यह तो, विशेष भाव से संज्ञा उत्पन्न होती है, भावसंज्ञा। उस भावसंज्ञा में से द्रव्यसंज्ञा होते-होते अंदर सारी क्रियाएँ होती हैं। तो यह जो टेपरिकॉर्डर बोलता है, वह द्रव्यसंज्ञा है और पहले वाली है भावसंज्ञा। भावसंज्ञा जब *पुद्‌गल* में आती है, परिणमित होती है तब द्रव्यसंज्ञा होती है। भावसंज्ञा वह कॉज़ेज़ है और द्रव्यसंज्ञा वह इफेक्ट है। अत: आत्मा खुद नहीं बोलता है। वह सब तो कुदरती रूप से हो जाता है। अत: आत्मा को इसमें कुछ नहीं करना है। यह आत्मा जानने जैसा है। आत्मा जानेंगे तो सारा निपटारा हो जाएगा। वर्ना, इसका निपटारा नहीं होगा।

जो आँखों से दिखाई न दे, कानों से सुनाई न दे, वह चेतन है। कानों से जो सुनाई देता है, 'टेलीविज़न' दिखाई देता है, 'रिकॉर्ड' सुनाई देती है, वह चेतन नहीं है। चेतन तो दिव्यचक्षु से दिखाई देता है। यानी जो बोल रहा है, वह चेतन नहीं है। चेतन बोल ही नहीं सकता। चेतन बोलता तो यह रेडियो नहीं बोल सकता और रेडियो बोलता है तो चेतन नहीं बोल सकता है। जड़-चेतन दोनों अलग हैं।

इस जगत् में अचल की नकल कोई कर ही नहीं सकता। जिसकी नकल हो सकती है, वह सारा चंचल ही है। पूरे जगत् की आराधना चंचल के लिए है, 'रिलेटिव' की ही है! इसलिए इस वाणी की 'टेपरिकॉर्डर' द्वारा नकल हो सकती है। वाणी चंचल है। उसमें चेतन-अचल के गुण नहीं है।

आत्मा की उपस्थिति में ही टेप बजे

प्रश्नकर्ता : यह वाणी जो बोली जाती है, उसका आत्मा के साथ निमित्त भाव से संबंध तो है न?

दादाश्री : संबंधवाला तो है ही न! रिलेटिव अर्थात् संबंधित। रिलेटिव सारा संबंधवाला ही है। अत: संबंध तो है न! आत्मा की उपस्थिति को लेकर यह सारा काम हो रहा है। यह वाणी जो बोली जा रही है, वह भी आत्मा की उपस्थिति को लेकर है। आत्मा निकल जाए तो नहीं बोल सकते। फिर भी आत्मा के गुणधर्म में शब्द नहीं है। लेकिन आत्मा की उपस्थिति हो तभी यह टेप बजती है। पहले टेप चार्ज हो चुकी है। लेकिन अभी भी आत्मा की उपस्थिति हो तभी डिस्चार्ज होती है, वर्ना नहीं होती।

वाणी का 'चार्ज पोइन्ट'

प्रश्नकर्ता : ये सारी 'डिस्चार्ज' टेप हैं, तो नई टेप किस तरह से बनाएँ?

दादाश्री : ये सारी बातें करते हो, उसके पीछे नई टेप बनती रहती है। वह भाव से टेप होती है। जैसा 'हमारा' भाव हो, उस अनुसार टेप हो जाती है। मेरा भाव बोलने में कैसा है? 'मुझे आपका अपमान करना है' तो वैसी टेप हो जाती है, 'मान देना है और प्रेम से बरताव करना है' तो वैसी टेप हो जाती है। अर्थात् भाव पर से टेप हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : भाव हो, तब नयी तैयार होती है?

दादाश्री : हाँ और क्या, भाव हो तब नयी टेप होती है। फिर बदलने जाएँ तो कुछ नहीं बदलता। यह वाणी, वह *पुद्गल* का धर्म नहीं है, यह औपचारिक चीज़ है। यानी पिछले जन्म के जो भाव हैं, गत भाव हैं, वे अभी भीतर उदय में आते हैं और उसी अनुसार तुरंत ही (कोडवर्ड में से शॉर्टहेन्ड होकर) टेप रेडी (तैयार) हो जाती है और शब्द निकलते हैं। यह काम बहुत स्पीडी हो जाता है। यह आश्चर्य है! यह वाणी निकलती है, उसमें मूल भाव नहीं हैं, गत भाव हैं। गत भाव वे डिस्चार्ज भाव हैं और उसके आधार पर वाणी निकलती है। इसलिए वाणी, वह 'डिस्चार्ज' का भी 'डिस्चार्ज' है और मन, वह 'प्योर' 'डिस्चार्ज' है। 'डिस्चार्ज' भाव अर्थात् निर्जीव भाव।

कोडवर्ड में से शॉर्टहेन्ड, फिर वाणी

प्रश्नकर्ता : यानी भाव के अनुसार कोडवर्ड हो जाता है।

दादाश्री : भाव करना नहीं होता। भाव क्या है, उस पर से कोडवर्ड हो जाता है। अभी उदय में आया हुआ भाव क्या है, उस पर से कोडवर्ड होता है।

प्रश्नकर्ता : वह उदय वर्तमान काल में आता है या भविष्य में आता है?

दादाश्री : जो भाव वर्तमान में उदय में आते हैं, उस पर से कोडवर्ड होता है और कोडवर्ड होकर फिर आगे सब होते होते होते फिर यह वाणी बाहर निकलती है। यह तो पूर्व जन्म में जो कोडवर्ड हो गया था, वह अभी प्रकट होता है।

वह टेप हो चुकी टेपरिकॉर्ड है, वही अभी बजती है और अभी जो नई टेप हो रही है, वह अभी हमें सुनाई नहीं देती। वह आगे जाकर सुनाई देती है। उसे परिपक्व होने में पचास-पौने सौ-सौ साल लगते हैं। यानी परिपक्व होने में बहुत देर लगती है। उसका समय बहुत ज़्यादा होता है। वाणी को (परिपक्व) होते-होते बहुत टाइम लगता है।

प्रश्नकर्ता : तो आपसे कोई सवाल पूछता है, तब आप वाणी द्वारा जवाब देते हैं, वह किस प्रकार से?

दादाश्री : मुझे तो कोई जवाब देने की ज़रूरत ही नहीं है, कोडवर्ड से जवाब निकल जाता है।

प्रश्नकर्ता : 'कोडवर्ड' यानी क्या?

दादाश्री : कोडवर्ड तक तो यह (टेप होकर) आया हुआ है। कोई प्रश्न पूछे कि तुरंत ही कोडवर्ड में से निकल जाता है। कोडवर्ड में से फिर उसका शॉर्टहेन्ड होता है और फिर यह वाणी निकलती है, सभी को समझ में आए ऐसी भाषा में। परंतु उस शॉर्टहेन्ड की भाषा ऐसी होती है कि समझ में नहीं आ सकती। अभी तो यह कोडवर्ड टेप होकर ही आया हुआ है। पूर्व जन्म का जो 'अवस्थित' था, वह 'व्यवस्थित' में कोडवर्ड के तौर पर आया है।

वह सबकुछ पूर्व जन्म का ही

प्रश्नकर्ता : यह जो कोडवर्ड तक टेप होकर आया हुआ है। वह अभी के दर्शन के आधार पर है या पिछले दर्शन के आधार पर है?

दादाश्री : वह सबकुछ तो पिछले दर्शन के आधार पर ही कोडवर्ड हुआ है न।

प्रश्नकर्ता : आप अभी हुई घटनाओं की बात कर रहे हैं, वह टेप तो अभी निकली।

दादाश्री : नहीं। सबकुछ पिछला ही है। अभी तो ये चीज़ें रूपक में आई हैं। मूल तो पिछला ही है न! वह तो पहले कोडवर्ड तक टेप हो ही चुका है, वह कोडवर्ड अभी हेल्प करता है।

प्रश्नकर्ता : कोडवर्ड में से जो वाणी निकलती है, क्या उसमें अभी का दर्शन कुछ करता ही नहीं?

दादाश्री : अभी का कुछ भी उसमें लेना-देना नहीं है न! ऐसा है न, कोडवर्ड तक सबकुछ पहले तैयार हो चुका होता है। वह सामनेवाला व्यक्ति पूछे कि तुरंत शॉर्टहेन्ड होते ही बाहर निकलता है, फटाफट!

प्रश्नकर्ता : क्या उस समय अपने अभी के ज्ञान का उसमें एडिशन होता है?

दादाश्री : नहीं, कुछ भी नहीं। वह जो है वही। इसीलिए हम कहते हैं न, यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड है। अभी ज्ञाता-द्रष्टा रहने से हमें भूलचूक दिखाई देती है कि इसमें क्या बजा! इस टेप में क्या भूलचूक होती है, वह दिखाई देती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसे आप सुधारते नहीं?

दादाश्री : वह सुधरती ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : तो क्या जो टेप हो चुकी है वही बाहर निकलती है?

दादाश्री : हाँ और वह तो सिर्फ मेरे अकेले के लिए नहीं है, सभी के लिए ऐसा ही है। प्लीडिंग उल्टी होती है न, तो वकील भी कहता है कि 'आपका नसीब फूटा हुआ है इसलिए ऐसा बोला गया।' परंतु जैसा टेप हो चुका है वैसा ही बोला जाता है। मेरे भाग्य के अनुसार तेरी टेपरिकॉर्ड निकलती है और दूसरे के केस में, दूसरे के भाग्य के अनुसार तेरी टेप निकलती है। क्या समझ में नहीं आया तुझे?

प्रश्नकर्ता : उसे आपने 'व्यवस्थित' है, ऐसा कहा न?

दादाश्री : सूक्ष्म हो चुका है, अब स्थूल होना बाकी है।

प्रश्नकर्ता : वह स्थूल होते समय आपका ज्ञान क्या काम करता है?

दादाश्री : आज के इस ज्ञान से, भीतर कुछ कमी हो तो पता चल जाता है कि यहाँ कमी है।

'मैं' जाननेवाला, 'बोलनेवाली' टेपरिकॉर्ड

तुम बोलते हो, वह भी टेपरिकॉर्ड है, लेकिन तुम्हें पता नहीं इसलिए 'मैंने बोला' ऐसा बोलते हो। वह तुमसे छूटे, ऐसा नहीं है। इसलिए तुम्हें वाणी पराए की नहीं लगती और मैं तो यह जान गया हूँ कि 'मैं कौन हूँ' और 'यह सब क्या है' उसका भेद, उसके बीच लाइन ऑफ डिमार्केशन डली है मेरे भीतर। यह चेतन का भाग और यह मेटर (जड़) का भाग, इन दोनों के बीच लाइन ऑफ डिमार्केशन डल चुकी है मेरे भीतर। तभी सॉल्व होता है, वर्ना यह पज़ल सॉल्व नहीं होता न! नहीं तो पराए के खेत की भींडी खाएँ, तो वह गाली ही देगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : नहीं चलेगा इस तरह तो। उसकी मार पड़ती है न, संसार में। लोग पराए खेत का लाभ उठाना चाहते हैं। *भान* नहीं होने से सभी कहते हैं, 'मैं बोला, उसने बोला, मैंने कैसा बोला'

ऐसा कहते हैं। तब 'मैं (कौन हूँ, बोलनेवाला कौन है)' ऐसा तय हुए बिना मैंने क्या बोला, कैसा बोला ऐसा कैसे कह सकते हैं? जब तक कोई भी व्यक्ति ऐसा कहता है कि 'मैं बोलता हूँ, मेरी वाणी है', तब तक वह अज्ञानी है। जितनी उसमें कमी है उतना वह बोलता है।

अत: यह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड वक्ता है, आप श्रोता हो और मैं ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। 'वक्ता क्या बोलता है' और 'श्रोता का क्या प्रतिभाव है', उन दोनों का मैं ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। हम दिखाई देते हैं दो, परंतु व्यवहार तीन का है।

प्रश्नकर्ता : आप यह कहते हैं कि 'टेपरिकॉर्ड बोलती है और मैं उसका ज्ञाता-द्रष्टा हूँ'। तो यह जो पद आप बता रहे हैं, वह असली पद है या उसके नीचे का पद है?

दादाश्री : बिल्कुल असली पद। वह जो ज्ञाता-द्रष्टा है न, वह इस शरीर का मालिक नहीं है, मन का मालिक नहीं है, वाणी का मालिक नहीं है। अलग है वह, इसलिए असली पद है, बिल्कुल असली पद है! इससे आगे कोई ऊपरी है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह असली पद कितनी दूर है?

दादाश्री : सबसे नज़दीक असली पद है, बाकी सब दूर हैं। खेत, पत्नी, बच्चे, बाकी सभी दूर हैं।

प्रश्नकर्ता : तो वह पद समझाइए आप। ज्ञाता-द्रष्टा अर्थात् किस तरह?

दादाश्री : 'ज्ञानी हूँ' इसलिए मैं ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। किसका? '(टेपरिकॉर्ड) क्या बोल रही है', उसका। दिस इज़ द ओरिजनल टेपरिकॉर्ड। ओरिजनल टेपरिकॉर्ड इज़ स्पीकिंग वीथ यू। टेपरिकॉर्ड इज़ द स्पीकर। आप श्रोता हो और मैं बीच में ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। दिस इज़ नॉट माय स्पीच, लेकिन टेपरिकॉर्ड की स्पीच है यह। यह जिसे टेपरिकॉर्ड कहते हैं, वह कितनी सुंदर बजती है! और मैं खुद बोलने जाऊँगा तो बिगड़ जाएगी।

प्रश्नकर्ता : इसमें श्रोता तो एक तरफ रखो लेकिन वक्ता और ज्ञाता, इन दोनों के बीच कौन-सा संबंध है?

दादाश्री : 'मैं' और 'बोलनेवाला' दोनों अलग हैं। 'बोलनेवाली' टेपरिकॉर्ड है और 'मैं' जाननेवाला हूँ। 'यह टेपरिकॉर्ड कैसी बज रही है' उसे देखता रहता हूँ और जानता रहता हूँ। उसमें कहाँ-कहाँ भूल होती है, कौन सी भूल हुई और कौन सी नहीं, इन सब पर मेरा ध्यान होता है। कौन-सा शब्द उलटा निकला, कौन-सा शब्द सुलटा निकला, उससे सामनेवाले को कोई फ़ायदा हो रहा है या नहीं, कौन-सा शब्द आपत्तिजनक है, कौन-सा शब्द हद से ज्यादा है या कौन-सा शब्द कम है, कौन-सा शब्द गैरवाज़िब है, क्या उससे सामनेवाले को दु:ख होगा, इन सभी बाबतों पर मेरा निरंतर रिसर्च (खोजबीन) जैसा चलता रहता है। यानी यह टेपरिकॉर्ड कैसी बजती है और क्या-क्या बोलती है, उसे देखना और जानना, यही मेरे स्टडी (अभ्यास) में होता है। सब ख्याल में आ जाता है। अधिकतर तो यह टेप बिना भूल की ही है लेकिन कभी-कभी भूल हो भी सकती है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

क्योंकि यह वाणी मेरी नहीं है, यह टेपरिकॉर्ड है। यह टेपरिकॉर्ड बोलती है और 'मैं' ज्ञाता-द्रष्टा हूँ। यह वाणी कैसी बोली जा रही है उसे 'मैं' देखता रहता हूँ।

उसे फिर मैं भी सुनता हूँ, हाँ। आप ऐसा

मत समझना कि मैं नहीं सुनता हूँ। आपको लगता है कि दादाजी हम सबको सुना रहे हैं! अरे भाई, मैं भी सुनता हूँ।

प्रश्नकर्ता : हम आपकी वाणी कानों से सुनते हैं। आप कैसे सुनते हैं? आपने कहा न कि 'यह वाणी मैं भी सुनता हूँ'।

दादाश्री : तब मैं क्या सुने बिना रहता होऊँगा? मुझे भी ज्ञान होता होगा या नहीं होता होगा, इस तरह सुनता हूँ तो? उसे मैं भी सुनता हूँ न! और भूलचूक होती हैं तो मैं भी भूल निकालता हूँ न! हाँ, उसमें एकाध भूल हुई हो तो मैं भी भूल निकालता हूँ कि 'यह भूल हुई है।'

टेप की भूल दिखती है देखनेवाले को

प्रश्नकर्ता : क्या ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड में भूल होती है?

दादाश्री : हाँ, कभी भूल हो सकती है पर उसे देखना है। अब हमारा क्या गुनाह होता है? हमारा किसी प्रकार का गुनाह नहीं होता क्योंकि मैं इस शरीर में रहता ही नहीं हूँ। इस शरीर में अट्ठाईस साल से फर्स्ट नेबरर (पहले पड़ोसी) के तौर पर रहता हूँ। तो फिर हमारा गुनाह कहाँ पर आया? फिर भी इस 'पटेल' के गुनाह हैं। ये 'ए.एम.पटेल' 356 डिग्री पर हैं और 'भगवान' स्वयं 360 डिग्री पर हैं। 'ए. एम. पटेल' की चार डिग्री कम है इसलिए कुछ भूल होना संभव है। ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड चार डिग्री की कमीवाली है, परफेक्ट नहीं है। अब यह चार डिग्री की कमीवाली है इसलिए 'मुझे' देखते रहना पड़ता है। 'देखनेवाला' जो है वह पूरी डिग्री से देखता है इसलिए जो भूलचूक होती है उसे सुधार देता है। 'उसकी' भूलें सुधर जाएगी तो कम्पलीट (पूर्ण) हो जाएगा।

इस समय यह जो बोला जा रहा है, उसकी जिम्मेदारी मेरी नहीं है क्योंकि मैं इसमें अलग हूँ। यह रिकॉर्ड बोल रही है, इसलिए जिम्मेदारी नहीं रहती। लेकिन यदि भूल हुई तो हम तुरंत उसे *नोंध* (नोट) करते हैं। लोगों से भूलवाली वाणी नहीं बोलनी है। वाणी एकदम क्लियर होनी चाहिए, बिलकुल भूल बगैर की होनी चाहिए, एक सेन्ट भी भूल नहीं होनी चाहिए। एक सेन्ट भी भूल रही तो लाखों मनुष्यों का नुकसान हो जाएगा। पूरे दिन में शायद एकाध भूल निकले, फिर भी हम नोट करते हैं। हाँ, भूल तो होनी ही नहीं चाहिए। भूल सुधारनी ही होगी। इस *पुद्गल* की भूल भी सुधारनी होगी। आत्मा में तो भूल है ही नहीं। किसकी भूल सुधारनी है?

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* की।

दादाश्री : हाँ। *पुद्गल* किसका? हमारा खड़ा किया हुआ। भले ही इस समय हम उसके मालिक नहीं हैं मगर किसने खड़ा किया? जिम्मेदारी किसकी? हु इज़ रिस्पोन्सिबल?

प्रश्नकर्ता : हम स्वयं ही।

दादाश्री : हाँ। इसलिए अब हमारी एक भी भूल रहनी नहीं चाहिए। उन भूलों में किसी मनुष्य या अन्य किसी को दुःख पहुँचाने की क्रिया ही नहीं होती। सिर्फ इतना कि वाणी ज़रा कड़क निकली और सुननेवाले को दुःख हो, तो उसे भूल कहेंगे। वाणी से ज़रा-सा भी दुःख नहीं होना चाहिए, सही बात होने पर भी दुःख नहीं होना चाहिए। एक अक्षर भी उलटा नहीं बोल सकते। एक अक्षर तो क्या से क्या कर डाले! यानी किसी को दुःख हो ऐसी वाणी निकलने पर मुझे तुरंत ही पता चल जाता है कि 'यह टेपरिकॉर्ड कैसी उतरी है, इसमें दोष किसका है? फिर जो दोषवाले

हैं उसे कह देता हूँ कि 'आप क्षमा माँग लें। आपने ऐसा क्यों किया? आपने भूल की है।' यानी माफी मँगवा लेता हूँ। किसी को दु:ख पहुँचाने के लिए यह टेपरिकॉर्ड नहीं है, सुख पहुँचाने के लिए है।

तुम्हारे साथ ये बातें होती हैं न, तब भी हमारे भीतर मशीनरी चलती ही रहती है। भूलें होती दिखाई देती हैं, ऑन द मोमेन्ट! उसमें तो देर ही नहीं लगती क्योंकि यह मैं नहीं बोलता न! यह टेपरिकॉर्ड बजती है इसलिए ज़िम्मेदारी मेरी नहीं है। जिम्मेदार टेपरिकॉर्ड है। फिर भी भीतर मशीन चलती रहती है, जो साफ कर देती है सारा। पेपर साफ, क्लियर कर देती है। वर्ना सामनेवाले का अहंकार भग्न होगा न! इसलिए इस टेपरिकॉर्ड में क्या भूल आई है, उसे फिर मुझे सुधारना पड़ता है।

अविरत ज्ञाता-द्रष्टा

अत: यह रिसर्च उसी का है। ऐसा चाहिए न, ऊपर? जितना आप मेरी वाणी का रिसर्च करें, उससे ज़्यादा मैं करता हूँ क्योंकि मेरी जागृति संपूर्ण होती है। मेरी जागृति उसमें ही होती है न!

अर्थात् ये जो दिखाई देते हैं न, वे भादरण के पटेल हैं और यह जो बोल रही है, वह टेपरिकॉर्ड है, ओरिजनल टेपरिकॉर्ड है और भीतर 'दादा भगवान' प्रकट हो गए हैं। उनके साथ मैं एकता से रहता हूँ। और कभी बाहर निकलकर अंबालाल के साथ भी एकाकार होता हूँ। दोनों तरफ का व्यवहार करने देना पड़ता है। अभी यह व्यवहार में आया है, ऐसा कहा जाएगा। वर्ना खुद अंदर अभेद रहता है।

प्रश्नकर्ता : आपकी द्रष्टाभाव की स्थिति सदैव रहती है क्या?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टा स्थिति सदैव रहती है। यह टेपरिकॉर्ड बात करती रहती है और अंदर शुद्ध उपयोग रहता है। यह क्या बोली और क्या नहीं इतना ही देखते रहते हैं। ये बातें भी चलती हैं और शुद्ध उपयोग भी रहता है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञाता-द्रष्टा भाव के साथ परमानंद भाव भी होता है न?

दादाश्री : परमानंद ही होता है, निरंतर परमानंद। यानी निरंतर अलग ही रहने का व्यवहार है। हम एक सेकन्ड के लिए भी *पुद्गल* भाग में नहीं रहते हैं। मैं तो क्षेत्रज्ञ के तौर पर देखता रहता हूँ। 'मैं' अपने क्षेत्र में ही रहता हूँ।

मालिक नहीं, पड़ोसी रहे

हम ये जो बातें करते हैं, यह टेपरिकॉर्ड बजती रहती है और मैं समाधि (आत्म स्वरूप) में हूँ। अट्ठाईस वर्षों से हम आत्मा से बाहर नहीं निकले हैं। इस समय भी हम आत्मा में ही हैं। इस वाणी में मैं नहीं रहता, इस देह में मैं नहीं रहता और इस मन में मैं नहीं रहता हूँ। इन तीनों के पड़ोसी के तौर पर रहता हूँ। तीनों के ही मालिकीपन का किसी तरह का दस्तावेज नहीं है। इन सब के मालिकीपन के टाईटल्स फाड़ दिए हैं और आप तो टाइटल सँभालकर वहाँ बैंक में रखकर आए हो, बैंक के खाने में, कि 'मेरा शरीर, मेरा शरीर'। कब तक रखोगे? बारह सौ वर्ष रखोगे?

प्रश्नकर्ता : किसी के हाथ की बात नहीं है।

दादाश्री : यदि किसी के हाथ की बात नहीं है, तो उसे 'मेरा' मानकर रखने का क्या अर्थ है? ऐसी मूर्खता कौन करे भला! आपने तो मकान के भी टाइटल नहीं फाड़े हैं। आप टाइटल नहीं फाड़ देते न? हमने तो इसके भी टाइटल

फाड़ दिए हैं। इसलिए कोई गालियाँ दे, थप्पड़ मारे, तो भी मालिक नहीं होता हूँ मैं, जबकि लोग तो मालिक हो जाते हैं न? गाली देने से पहले मालिक हो जाते हैं न? थप्पड़ मारे तो मालिक हो जाते हैं या नहीं? ऐसा कहते हैं न कि 'क्यों मुझे थप्पड़ मारा?'

मन-वचन-काया की मालिकी मेरी है ही नहीं, कितने ही समय से आय एम नॉट द ऑनर (मैं मालिक नहीं हूँ)। मालिकीपन का दावा नहीं है हमारा और जो सत्संग होता है, वह सारा ओरिजनल टेपरिकॉर्ड करती रहती है। एक भी शब्द व्यर्थ नहीं जाता, वाणी के मालिक नहीं है इसलिए। हममें अहंकार और ममता शून्यता तक पहुँच गए हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह टेपरिकॉर्ड बज रही है। 'मैं बोला' और यह 'मेरी वाणी' नहीं है, इसलिए यह टेपरिकॉर्ड है और इस टेपरिकॉर्ड में अहंकार और ममता दोनों नहीं है, इसलिए प्योर (शुद्ध) है।

'मैं' : 'बोलनेवाला' : 'अंबालाल'

प्रश्नकर्ता : तो क्या इस टेपरिकॉर्ड में अंबालालभाई का कोई हिस्सा नहीं है?

दादाश्री : नहीं। (व्यवहार से) इन सब के मालिक वे खुद हैं। यदि 'मैं बोलता हूँ' ऐसा बोले तब तो मालिकीपन होता है और 'खुद' तो मालिक है नहीं। मालिक होता तो कोई ऐसा नहीं कहता कि मुझे नहीं बोलना था फिर भी बोला गया। लोग तो ऐसा बोलते हैं और बोलने के बाद पछताते हैं क्या!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अब बोलनेवाले खुद हैं ही नहीं। यह टेपरिकॉर्ड बोलती है। और टेपरिकॉर्ड अंबालाल बोले तो उसे कॉज़ कहेंगे और यह टेपरिकॉर्ड बोलती है तो वह परिणाम है। अत: ये सारे परिणाम हैं। अंबालाल ऐसा नहीं कह सकते कि 'मैं बोला'। जबकि जगत् के सभी लोग ऐसा कहते हैं कि 'मैं बोला'।

इस वर्ल्ड में कोई व्यक्ति बोल ही नहीं सकता! जो बोलता है, वह ऐसा कहता है 'मैं बोला।' लेकिन वह भ्रांति है। बोल नहीं सकता वर्ल्ड में कोई व्यक्ति! एक बार जब ऐसा कहा तब साइन्टिस्टों को समझ में नहीं आया, साइन्टिस्ट भी उलझन में पड़ गए!

मत बदलो व्यवहार, बदलो बिलीफ

ये सभी मनुष्यमात्र जो बोलते हैं या जीवमात्र जो बोलते हैं, वह टेपरिकॉर्ड बजती है। आपकी भी ओरिजनल टेपरिकॉर्ड है। लेकिन आप तो उसके मालिक हो न? क्या आप ऐसा बोलते हो कि यह टेपरिकॉर्ड है? नहीं बोलते। क्योंकि आपको अहंकार है कि 'मैं बोला।' और पूरा जगत् इगोइज़मवाला है। इसलिए कहता है, 'हम बोलता है, हम बोलता है।' अरे क्या, हम बोलता है? इस 'हम' से तो बंधे हुए हैं। इसके बजाय ये बेचारी गायें-भैंसें अच्छी, गधेसींग भी अच्छे। बोलते हैं, परंतु कहते नहीं कि 'मैं बोला'। यह कुत्ता खुद अहंकार नहीं करता कि 'मैं बोला'। अब ये जो जानवर हैं, वे भले 'टेपरिकॉर्ड' नहीं बोलते, पर 'माय स्पीच' भी नहीं बोलते बेचारे! जबकि ये तो सभी लोग ऐसा कहते हैं कि 'हम बोलते हैं।' 'मैं बोला और मैंने ऐसा किया, वैसा किया।' ऐसे ही सारे अहंकार करते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : परंतु उसके बिना व्यवहार ही कैसे हो सके, ऐसा है?

दादाश्री : व्यवहार से 'मैं बोला' बोले, उसमें हर्ज़ नहीं है। व्यवहार में तो कहना ही

पड़ेगा न! व्यवहार में बोल सकते हैं ऐसा। लेकिन ऐसी बिलीफ नहीं होनी चाहिए। हम 'हमारी वाणी' ऐसा बोलते हैं, तो सिर्फ ड्रामेटिक बोलते हैं। हमारी बिलीफ में ऐसा नहीं है। सिर्फ व्यवहार में बताने के लिए हमें कहना पड़ता है कि 'मैं बोला।' और आप जो बोलते हो, वही तो आपकी बिलीफ में भी है कि 'मैं ही बोला।'

पूरा जगत् भी ऐसा ही कहता है कि 'मैं बोला।' 'ओहोहो! बड़े आए बोलनेवाले!' इस दुनिया में कोई बोल सकता होगा क्या? इस दुनिया में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जन्मा कि जो स्वतंत्र एक शब्द भी बोल सके। कोई भी जीव, गधा या कुत्ता भी नहीं बोल सकता। क्योंकि बोलने की सत्ता किसी के हाथ में नहीं है।

बोलने की सत्ता हमारी नहीं है। यह तो टेपरिकॉर्ड टेप हो चुकी है, उतना ही बोला जाता है। यह तो बोलने का अहंकार करता है। बोल रहा है दूसरा और खुद कहता है 'मैं बोल रहा हूँ'। अहंकार किसलिए है? 'कौन बोल रहा है' वह नहीं जानता इसलिए। यदि बोलनेवाले को जान जाओगे न, तो आपका अहंकार रहेगा ही नहीं। यह तो सारी टेपरिकॉर्ड अंदर आयोजित हो चुकी है। लेकिन मन में 'मैं बोला' ऐसा मानते हैं। हाँ, उसी को भ्रांति कहते हैं और भ्रांति से ही यह जगत् कायम है।

सही-गलत टेप में, ज्ञानी निर्लेप

प्रश्नकर्ता : आप बहुत सुंदर दृष्टांत देते हैं।

दादाश्री : ये मैंने नहीं दिए, यह टेपरिकॉर्ड देती है। यह इनाम मुझे मत देना। यह टेपरिकॉर्ड बोलती है। मैं भी खुश हो जाता हूँ कि 'अहोहो! आज टेपरिकॉर्ड सुंदर बजी।'

प्रश्नकर्ता : इस टेप में आश्चर्य भरा है!

दादाश्री : लेकिन ऐसा निकलने पर लोग मुझे प्रेज़ेन्ट (उपहार) देते हैं। यह जवाब अंबालालभाई नहीं देते हैं, यह टेपरिकॉर्ड देती है। हम इसके लिए गर्व नहीं लेते कि 'मैं कितना सुंदर बोला' और ऐसा-वैसा। क्योंकि वाणी मेरी नहीं है, फिर मुझसे ऐसा बोला ही कैसे जा सकता है? इसलिए रिकॉर्ड अच्छी बजे तब भी मैं उसका मालिक नहीं होता हूँ। और यह रिकॉर्ड तो लोग तारीफ़ करें ऐसी ही होती है न! पर हम उसके मालिक नहीं होते। मालिक होने पर तो पॉइज़न हो जाता है। हम तो उसकी जिम्मेदारी ही नहीं लेते।

कई बार तो इस टेपरिकॉर्ड को सुनकर मैं भी खुश हो जाता हूँ और कुछ दूसरा सुनें तब भी हम नाखुश नहीं होते पर आप सभी नाखुश हो जाते हो। यों तो आप नाखुश नहीं होते हैं पर ज़रा कमज़ोर पड़ जाते हैं, फिर सुधार लेते हैं। जब सुनते हैं उस समय पहले तो कमज़ोर पड़ जाते हैं। उस समय सोचते हैं कि, दादाजी, ऐसा क्यों बोले? इसलिए हमें कहना पड़ा कि यह टेपरिकॉर्ड बोलती है।

यह टेपरिकॉर्ड तो यों ही निकलती रहती है और हम तो 'यह टेपरिकॉर्ड क्या बोलती है' इसे देखते रहते हैं और जानते रहते हैं, बस! खराब बोला जाए उसे भी जानते हैं और अच्छा बोला जाए उसे भी हम जानते हैं। दोनों के जानकार हम। उसमें फिर सही-गलत की भी जिम्मेदारी नहीं क्योंकि टेपरिकॉर्ड बोलती है, 'मैं' तो 'जानकार' हूँ। 'मैं' तो अलग हूँ।

हमें तो अच्छी वाणी से भी लेना-देना नहीं और खराब वाणी से भी लेना-देना नहीं। वाणी अच्छी निकली तो भी मेरी नहीं है और खराब निकली तो भी मेरी नहीं। हम तो अच्छी हो तो

भी 'मेरी' नहीं कहते और खराब हो तो भी 'मेरी' नहीं कहते। जो निकली वही सही, करेक्ट! इसका मालिकीपन नहीं है। सही जवाब हो या भूलवाला हो लेकिन टेपरिकॉर्ड का। तारीफ करें या खराब कहें, तब भी ओरिजनल टेपरिकॉर्ड का। इसलिए यदि तुम यश दो तो उसकी हमें ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह टेपरिकॉर्ड बोल रही है, इससे हमें क्या लेना-देना? और अपयश दो तो भी हमें कुछ लेना-देना नहीं है।

चलो, तीर्थंकरों की दृष्टि से...

प्रश्नकर्ता : यह क्या होता है? यह टेपरिकॉर्ड ज़रा बजती है न, उस समय ऐसा लगता है कि यह टेपरिकॉर्ड है। फिर थोड़ी देर ज़्यादा बोले न, तो भीतर जोइन्ट हो जाता है, जुदापन जो रहता था, वह नहीं रहता।

दादाश्री : फिर भी अपने लिए अब ये सारी निकाली बाबत हैं। पहले तो आप ऐसा जानते थे कि ये सभी व्यक्ति बोल रहे हैं और उससे आपको दुःख होता है। लेकिन अब आपको पता चल गया कि यह तो रिकॉर्ड बोल रही है। जब सही ज्ञान हुआ तब आपको पता चला कि यह तो रिकॉर्ड बोल रही है, यह फाइल है, यह 'व्यवस्थित' है।

इतनी अधिक गूढ़ पहेली है कि इस जगत् का किसी से भी हल नहीं आया है। तीर्थंकर इसका हल लाए और चले गए और जिसने तीर्थंकरों के दर्शन किए, वे लोग सफल हो गए। जिन लोगों ने भगवान के दर्शन भाव से किए और भगवान को कहा कि मुझ पर कृपा बरसाइए, वे लोग सफल हो गए। बाकी, कोई इसका हल नहीं लाया। बहुत गूढ़, गूढ़, गूढ़ पहेली है यह!

इस पज़ल का सॉल्यूशन हमने थोड़े भाग में दे दिया है, उसे शॉर्टकट करके। शॉर्टकट में दे दिया है इसलिए परेशानी ही खत्म हो गई न! यानी यदि आपको मोक्ष में जाना है तो भगवान की दृष्टि से चलना पड़ेगा। भगवान की दृष्टि कैसी है कि जगत् में कोई दोषित है ही नहीं और संसार में भटकना हो तो लोकदृष्टि से चलना पड़ेगा। लोकदृष्टि कैसी है कि 'यह इसने किया, इसने मेरे साथ ऐसा किया।' उससे यहाँ पर भटकना पड़ेगा। और भगवान की दृष्टि कैसी है कि कोई जीव गुनहगार है ही नहीं। अर्थात् कोई गालियाँ दे रहा हो तो, मैंने आपको ज्ञान दिया है कि वह रिकॉर्ड बोल रही है, उसमें उसका क्या गुनाह है? और रिकॉर्ड जो बोली है, उसका हमें बुरा नहीं लगता। ऐसी भगवान की दृष्टि है, इससे मोक्ष होता है। ये तो सभी अज्ञानता से ऐसा मानते हैं कि वे खुद ही बोल रहे हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि यह तो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। लेकिन वह कुछ बोलता ही नहीं है। यानी अपना ज्ञान इटसेल्फ ही सभी ओर से छुड़वाता है और निरंतर समाधि में रखे ऐसा यह ज्ञान है।

ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध रहना चाहिए। 'देह किस तरफ रहती है, देह की क्या-क्या क्रियाएँ हैं' वह ज्ञान में दिखाई देना चाहिए। वाणी कठोर निकलती है या नरम निकलती है, वह भी आपको दिखाई देना चाहिए कि अभी तक कठोर वाणी निकलती है। लेकिन वह भी रिकॉर्ड है, वह दिखाई देना चाहिए।

अंत में तो बात एक ही है

प्रश्नकर्ता : ये तीर्थंकरों की जो अभिव्यक्ति रही होगी, वह क्या अलग रही होगी? वे अकर्तापन कहते थे? आप टेपरिकॉर्ड शब्द कहते हैं, वे लोग अकर्तापन कहते थे, ऐसा नहीं है क्या?

दादाश्री : पब्लिक को जैसी ज़रूरत थी, वैसी उनकी वाणी निकलती थी। वे खुद जानते थे कि यह वाणी, वह मेरा स्वरूप नहीं है। वीर (महावीर) भगवान को एक क्षण भी ऐसा नहीं लगा था कि यह मैं बोल रहा हूँ। बाकी वीर भगवान बोले हैं, वह भी टेपरिकॉर्ड ही बजी है। मैंने टेपरिकॉर्ड कहा, क्योंकि इस काल में टेपरिकॉर्डर निकले हैं। इसलिए टेपरिकॉर्डर आपको बताता हूँ, इशारा करता हूँ। लेकिन उन दिनों टेपरिकॉर्डर था ही नहीं न!

सिर्फ तीर्थंकर ही जानते थे कि यह रिकॉर्ड बज रही है। तो हमने वह बात खुली कर दी है कि यह रिकॉर्ड ही बज रही है। तू सुनता है और मैं देखता हूँ और जानता हूँ। उसके मन में ऐसा लगता है कि यह मैं रोज़ बोलता हूँ, लेकिन यह तो रिकॉर्ड बजती है।

विज्ञान से असरमुक्त

यह विज्ञान इतना सुंदर है न कि किसी प्रकार से बाधक ही नहीं है और झटपट हल ला दे ऐसा है। पर इस विज्ञान को *लक्ष* में रखें कि दादा ने कहा है कि वाणी अर्थात् बस रिकॉर्ड ही है, फिर कोई कुछ भी बोला हो या कोतवाल झिड़कता हो पर उसकी वाणी वह रिकॉर्ड ही है, ऐसा फिट हो जाना चाहिए, तब फिर यह कोतवाल झिड़क रहा हो तो आप पर असर नहीं होगा।

कोई भी व्यक्ति बहुत अधिक बोलता रहता हो तो भी आपको समझ लेना चाहिए कि यह रिकॉर्ड बोली। रिकॉर्ड को रिकॉर्ड समझें, तो आप फिसलोगे नहीं। वर्ना तन्मयाकार हो जाएँ तो क्या होगा?

अपने ज्ञान में यह 'वाणी रिकॉर्ड है' यह एक चाबी है और उसमें हमें गप्प नहीं मारनी है। वह है ही रिकॉर्ड। और रिकॉर्ड मानकर यदि आज से आरंभ करो तो? तब फिर है कोई दुःख? अपनी उच्च जातियों में लकड़ी लेकर मारामारी नहीं करते। यहाँ तो सब वाणी के ही धमाके! अब उसे जीत लेने के बाद रहा कुछ? इसलिए मैंने यह खुलासा किया कि वाणी वह रिकॉर्ड है। यह बाहर खुलासा करने का कारण क्या है? इसके कारण आपके मन में से वाणी की क़ीमत चली जाएगी। हमें तो कोई कुछ भी बोले न तो भी उसकी एक अक्षर भी क़ीमत नहीं है। मैं जानता हूँ कि वह बेचारा किस तरह बोल सकता है? वही लट्टू है न! और यह तो रिकॉर्ड बोल रही है। वह तो लट्टू है, दया रखने जैसा है!

प्रश्नकर्ता : 'यह लट्टू है' इतना उस समय *लक्ष* में नहीं रहता है।

दादाश्री : नहीं, पहले तो 'वाणी वह रिकॉर्ड है' ऐसा तय करो। फिर 'यह जो बोलता है, वह 'व्यवस्थित' है। यह फाइल है, इसका समभाव से निकाल करना है।' यह सारा ज्ञान साथ-साथ हाज़िर रहे न, तो आप पर कुछ भी असर नहीं होगा। जो बोलता है वह 'व्यवस्थित' है न? और रिकॉर्ड ही बोलती है न? वह खुद नहीं बोलता न आज? इसलिए कोई व्यक्ति जोखिमदार है ही नहीं। और भगवान को ऐसा दिखाई दिया है कि कोई जीव किसी प्रकार से जोखिमदार है ही नहीं। इसलिए कोई गुनहगार है ही नहीं, भगवान ने यह देखा था। इस दृष्टि से भगवान मोक्ष में गए। और जगत् ने 'गुनहगार है' ऐसा देखा, इसलिए जगत् में भटक रहे हैं। बस, इतना ही दृष्टि का फर्क है!

यह ज्ञान अनुभव में लो

प्रश्नकर्ता : यह दृष्टि कैसे विकसित करें?

दादाश्री : यही ज्ञान मैंने आपको दिया है। अपना ज्ञान ही ऐसा दिया हुआ है कि आपको कोई भी अड़चन न आए, ऐसा है, लेकिन यदि गहराई में उतरें तो! कितना भी खराब बोले, तो भी वह रिकॉर्ड है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, पर यह जो दृष्टि है वह अंदर फिट हो जाए, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए?

दादाश्री : पुरुषार्थ कुछ भी नहीं करना है। इसमें तो 'दादाजी' की यह बात बिलकुल सच है, उस पर उल्लास जैसे-जैसे आएगा, वैसे-वैसे अंदर फिट होता जाएगा।

इसलिए अब ऐसा तय कर दो कि दादा ने कहा है, वैसा ही है कि यह वाणी टेपरिकॉर्ड ही है। अब इसे अनुभव में लो। वह धमकाता हो तो उस घड़ी आप अपने मन में हँसने लगें, ऐसा कुछ करो। क्योंकि वास्तव में वाणी वह टेपरिकॉर्ड ही है और ऐसा आपको समझ में आ गया है। क्योंकि नहीं बोलना हो तो भी बोल दिया जाता है, तो फिर 'यह टेपरिकॉर्ड ही है', यह ज्ञान फिट कर दो।

प्रश्नकर्ता : मानों कि सामनेवाले की टेपरिकॉर्ड बज रही हो और उस समय हम कहें कि यह रिकॉर्ड बज रही है। पर अंदर वापस 'ये जो कह रहा है, वह गलत है, वह ठीक नहीं है, ऐसा क्यों बोल रहा है?' ऐसा रिएक्शन भी हो जाता है।

दादाश्री : नहीं, पर ऐसा किसलिए होना चाहिए? यदि वह रिकॉर्ड ही बज रही है, आप यदि जान गए हो कि यह रिकॉर्ड ही बज रही है, तो फिर उसका असर ही नहीं होगा न!

प्रश्नकर्ता : पर खुद निश्चित रूप से मानता है, सौ प्रतिशत मानता है कि यह रिकॉर्ड ही है, फिर भी वह रिएक्शन क्यों आता है?

दादाश्री : ऐसा है कि वह रिकॉर्ड ही है, ऐसा रिकॉर्ड की तरह तो सब आपने तय किया हुआ ही है। पर 'रिकॉर्ड' है, ऐसा एक्ज़ेक्ट ज्ञान उस घड़ी रहना चाहिए। परंतु वह एकदम रिकॉर्ड के अनुसार नहीं रह सकता क्योंकि अपना अहंकार उस घड़ी कूदता है। इसलिए फिर 'उसे' 'हमें' समझाना पड़ता है कि 'भाई, यह रिकॉर्ड बज रही है, तू किसलिए शोर मचाता है?' ऐसा हम कहें तब फिर अंदर शांत हो जाता है।

शब्दों को कहाँ तोलने बैठें?

प्रश्नकर्ता : आपका ही वाक्य है, कि 'जगत् का कोई शब्द हम पर असर न करें, ऐसा टेस्टेड हो जाना चाहिए।'

दादाश्री : हाँ। कोई हमें ऐसे शब्द कहे कि, 'आप गधे हो, मूर्ख हो' वह हम पर असर नहीं करे। 'आपमें अक्ल नहीं है' ऐसा मुझे कहे तो, मैं कहूँ कि, 'उस बात को तू जान गया, इतना अच्छा हुआ। मैं तो पहले से ही जानता हूँ। तूने तो आज जाना।' तब फिर से कहूँ कि, 'अब दूसरी बात कर।' तो निबेड़ा आएगा या नहीं आएगा?

प्रश्नकर्ता : तभी निबेड़ा आएगा न!

दादाश्री : इस अक्ल को तौलने बैठें तो तराजू किसके वहाँ से लाएँ? बाट किसके वहाँ से लाएँ? वकील कहाँ से लाएँ?! इससे तो अच्छा हम कह दें कि, 'भाई, हाँ, अक्ल नहीं है, यह बात तो तूने आज जानी। हम तो पहले से ही जानते हैं। चल, आगे की बात कर अब।' तो निबेड़ा आए इसमें।

सामनेवाले की बात पकड़कर बैठने जैसा

नहीं है और शब्द तो सारे टेपरिकॉर्ड बोलती है। रिकॉर्ड बोलती है, उसकी क्या चिंता? रिकॉर्ड बोले, उसमें क्या परेशानी है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : तो परेशानी नहीं है। ठीक है।

सामनेवाला कर्ता नहीं, व्यवस्थित कर्ता

प्रश्नकर्ता : यह तो 'अक्रम विज्ञान' के अंक में वाणी के बारे में बहुत अच्छा सत्संग आया है कि, 'यह वाणी वह टेप है। सामनेवाले की वाणी भी टेप है और तेरी वाणी भी टेप है।'

दादाश्री : लेकिन एक भाई कह रहे थे, कि यह मानने में आए ऐसी चीज़ नहीं है। मैंने कहा, 'मानो या नहीं मानो लेकिन ऐसा ही है। आपकी वाणी भी ऐसी टेप है। यदि उसे वाणी का कर्ता मानोगे तो आपने उसे कर्ता माना। अपना अविरोधाभासी प्रूव होना चाहिए, हर एक बात में, एक भी शब्द विरोधाभासी नहीं लगना चाहिए।'

सामनेवाला 'कर्ता' है, अब आपको ऐसा मानना ही नहीं चाहिए। 'मैं कर्ता नहीं हूँ', इसी तरह सामनेवाला भी कर्ता नहीं है। लेकिन उसे कर्ता मानोगे तो आप भी कर्ता हो ही गए! दूसरों को कर्ता नहीं देखो तो खुद अकर्ता और सामनेवाला भी अकर्ता। 'मैं करता हूँ, तू करता है और वे करते हैं', इन तीनों ही प्रकार के कर्ता पदों में नहीं रहना चाहिए, किसी में भी। कोई कुछ भी नहीं करता, इसी प्रकार से दिखाई देना चाहिए। कोई गालियाँ दें तब भी आपको 'वह कर्ता नहीं है, व्यवस्थित कर्ता है', ऐसा *भान* रहना चाहिए।

यदि सामनेवाला गलियाँ दे और उसे कर्ता मानें तो आप ज्ञान की बात पूरी समझते ही नहीं हैं। सिद्धांत ही यह है कि परसत्ता काम कर रही है।

जगत् में 'पोज़िटिव' ही सुख देगा

ये टेपरिकॉर्ड और ट्रान्समीटर, उनके जैसे तो कितने ही साधन अभी बन गए हैं। तो बड़े-बड़े लोगों को भय लगता ही रहता है कि कोई कुछ टेप कर लेगा तो? अब इनमें तो शब्द टेप होते हैं, उतना ही है। परंतु मनुष्य का शरीर, मन सबकुछ ही टेप हो जाए, ऐसा है। उसका लोग थोड़ा-सा भी भय नहीं रखते। यदि सामनेवाला सो रहा हो और आप कहो कि 'यह नालायक है', तो वह उसके अंदर टेप हो गया! वह फिर उसे फल देगा। अर्थात् सोते हुए मनुष्य के बारे में भी नहीं बोल सकते। एक अक्षर भी नहीं बोल सकते क्योंकि सबकुछ टेप हो जाए, ऐसी यह मशीनरी है! बोलना हो तो अच्छा बोलना कि, 'साहब, आप बहुत अच्छे व्यक्ति हैं' अच्छा भाव रखना, तो उसके फलस्वरूप आपको सुख मिलेगा। परंतु थोड़ा-सा भी उल्टा बोले, अंधेरे में भी बोले या अकेले में भी बोले, तो उसका फल कड़वा ज़हर जैसा आएगा। यह सब टेप ही हो जानेवाला है। इसलिए अब यह अच्छा टेप करवाओ।

प्रश्नकर्ता : कड़वा तो चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : कड़वा यदि आपको चाहिए तो बोलना, नहीं चाहिए तो मत बोलना। कोई मारे, फिर भी उसे कड़वा मत बोलना। उसे कहना कि, 'तेरा उपकार मानता हूँ।'

भगवान ने तो कहा है कि इस काल में कोई गालियाँ दे गया हो, तो उसे आप भोजन करने के लिए बुलाना। इतनी अधिक वाइल्डनेस (जंगलीपन) हो पर उसे क्षमा ही देना। यदि ज़रा भी रिवेन्ज (बदला) लेने गए न, तो फिर वापस संसार में खिंचें जाएँगे। रिवेन्ज नहीं लेना है इस काल में। इस दूषमकाल में निरी वाइल्डनेस होती

है। कौन से विचार नहीं आएँगे, वह कहा ही नहीं जा सकता। दुनिया से बाहर के विचार भी आते हैं! इस काल के जीव तो बहुत टकराएँगे। ऐसे लोगों के साथ आप बैर बाँधेंगे तो आपको भी टकराना पड़ेगा। इसलिए हम कहते हैं, 'सलाम साहब।' इस काल में तुरंत माफ़ी दे देनी चाहिए, नहीं तो आपको खिंचाना (खिंचे जाना) पड़ेगा। और यह जगत् तो बैर से ही खड़ा रहा है।

अज्ञान दशा में ऐसा लगता है कि 'यह मुझे ऐसा कहता रहता है, वह मुझसे किस तरह सहन होगा?' तब तक रोग कम नहीं होते। आपको सहन करना ही नहीं है। मात्र समझ लेना है कि यह रिकॉर्ड है। यदि आप वाणी को रिकॉर्ड-स्वरूप नहीं मानोगे तो आपकी वाणी वैसी ही निकलेगी। इसलिए कार्य-कारण, कार्य-कारण चलते ही रहेंगे।

इस काल में किसी को समझाया जा सके, ऐसा नहीं है। यदि समझाना आता हो तो अच्छे शब्दों में समझाओ कि वह टेप हो जाए, फिर भी जिम्मेदारी नहीं आए। इसलिए 'पोज़िटिव' रहना। जगत् में 'पोज़िटिव' ही सुख देगा और 'नेगेटिव' सब दुःख देगा। अत: कितनी बड़ी जोखिमदारी है! न्याय-अन्याय देखनेवाला तो बहुत लोगों को गालियाँ देता है। न्याय-अन्याय तो देखने जैसा ही नहीं है। न्याय-अन्याय तो एक थर्मामीटर है जगत् का, कि किसका कितना बुख़ार उतर गया और कितना चढ़ा?

जितनी प्रेममय डीलिंग होगी, उतनी ही वाणी इस टेपरिकॉर्ड में पुसाए ऐसी है। उसका यश अच्छा मिलेगा। जब तक जगत् व्यवहार की आपको ज़रूरत है, तब तक मनोहर लगे वैसा बोलो। जिसके वाणी, वर्तन और विनय मनोहर हो गए, वह प्रेमात्मा हो गया।

सामान्य व्यवहार में बोलने में हर्ज नहीं है, परंतु देहधारी मात्र के लिए कुछ भी टेढ़ा-मेढ़ा बोला गया तो वह अंदर रिकॉर्ड हो जाएगा! खुद की जिम्मेदारियों का *भान* ही नहीं है, इसलिए गैरजिम्मेदारीवाला मत बोलना। गैरजिम्मेदारीवाला आचरण मत करना। गैरजिम्मेदारीवाला कुछ भी मत करना, सबकुछ पोज़िटिव लेना। किसी का अच्छा करना हो तो करने जाना। नहीं तो बुरे में तो पड़ना ही नहीं और बुरा सोचना भी नहीं। बुरा सुनना भी नहीं किसी का। बहुत जोखिमदारी है। नहीं तो इतना बड़ा जगत्, उसमें मोक्ष तो खुद के अंदर ही पड़ा हुआ है पर मिलता नहीं है! और कितने ही जन्मों से भटकता रहता है!

निःस्पंदन में स्थंभित हो जाए टेपिंग

जो ग्रहण होता है, वह रूपी ऐसे सूक्ष्म परमाणुओं के रूप में होता है। वे भर जाते हैं और फिर स्थूल रूपक में आते हैं, उसके बाद क्रिया होती है। प्रत्येक परमाणु में टेप करने की शक्ति है! आँखों में फिल्म खींचने की शक्ति है! अंदर अपार शक्तियाँ हैं! इस एक अंदर की मशीन पर से दूसरी सारी अपार मशीनें बनती हैं। यानी यह मशीन ज़बरदस्त पावरफुल (शक्तिशाली) है।

लोग ऐसा कहते हैं, 'आप नालायक हो।' ऐसा 'नालायक' बोलनेवाले को यह *भान* नहीं है, सुननेवाले को भी *भान* नहीं है। अब सुननेवाले पर जितना असर हुआ, उसमें उतने ही परमाणु प्रविष्ट हुए और बोलनेवाले में भी परमाणु पहुँचते हैं।

आप जितना क्लेश करोगे, सामनेवाले के उतने ही परमाणु आप में प्रविष्ट होंगे। उससे सामनेवाला भी बिगड़ेगा और आप भी बिगड़ोगे।

आपने किसी से कहा हो कि, 'यह जज

अच्छा नहीं है'। फिर आप उन जज के पास जाएँगे तो, पहले जो खराब बोले थे उन परमाणुओं का, जज को आपकी आँखों पर से ही पता चल जाता है, परमाणु पहुँच जाते हैं। उसी प्रकार यदि हम किसी के सामने बोलें कि ये जज अच्छे हैं तो हमारे अंदर उनके लिए जो अच्छे परमाणु भरे हुए हैं उन (परमाणुओं) का कुछ समय बाद जज पर अच्छा असर होगा ही। कुछ भी उल्टा सोचने योग्य नहीं है और सीधा भी सोचने योग्य नहीं है (शुद्ध देखना है)।

प्रश्नकर्ता : जिसे टेप में रिकॉर्ड नहीं करना हो उसके लिए क्या रास्ता है?

दादाश्री : कोई भी स्पंदन नहीं करना चाहिए। सबकुछ देखते ही रहना चाहिए परंतु ऐसा होता नहीं है न! यह भी मशीन है और फिर पराधीन है। इसलिए हम दूसरा रास्ता बताते हैं कि टेप हो जाए तो तुरंत मिटा देना, तो चलेगा। यह प्रतिक्रमण उसे मिटाने का साधन है। उससे एकाध जन्म में परिवर्तित होकर ऐसा सब बोलना बंद हो जाएगा।

नहीं है यह चाबी दुरुपयोग के लिए

'स्थूल संयोग, सूक्ष्म संयोग और वाणी के संयोग पर हैं और पराधीन हैं।' इतना ही वाक्य खुद की समझ में रहता हो, खुद की जागृति में रहता हो तो सामनेवाला व्यक्ति चाहे जो बोले तो भी हमें ज़रा भी असर नहीं होता और यह वाक्य कल्पित नहीं है। जो एक्ज़ेक्ट है, वह कह रहा हूँ। मैं आपको ऐसा नहीं कहता हूँ कि मेरे शब्दों का मान रखकर चलो, एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है। हक़ीक़त आपको समझ में नहीं आने से आप मार खाते हो।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला व्यक्ति उल्टा बोले तब आपके इस ज्ञान से समाधान रहता है। पर मुख्य सवाल यह रहता है कि हमसे कड़वा निकलता है, तो उस समय हम इस वाक्य का आधार लें तो हमें उल्टा लायसेन्स मिल जाता है क्या?

दादाश्री : इस वाक्य का आधार ले ही नहीं सकते न! उस समय तो आपको प्रतिक्रमण का आधार दिया है। सामनेवाले को दुःख हो जाए ऐसा बोला गया हो तो प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। और सामनेवाला चाहे जो बोले, तब वाणी पर है और पराधीन है, इसका स्वीकार किया। इसलिए आपको सामनेवाले से दुःख रहा ही नहीं न!

अब आप खुद उल्टा बोलते हो, फिर उसका प्रतिक्रमण करते हो, इसलिए आपके बोलने का आपको दुःख नहीं रहा। अर्थात् इस प्रकार सारा हल आ जाता है।

यह विज्ञान ऐसा है कि निवेड़ा ला देता है। कोई हमें झिड़के, हम पर हँसे तो हम हँसने लगते हैं। हम जानते हैं कि यह रिकॉर्ड ऐसी बज रही है। सामनेवाला बोलेगा किस तरह? क्योंकि वही लट्टू है, फिर। इस बेचारे पर तो दया रखने जैसी है!

प्रश्नकर्ता : कई बार नहीं बोलना हो, फिर भी बोल दिया जाता है। फिर पछतावा होता है।

दादाश्री : वाणी से जो कुछ बोला जाता है, उसके हम 'ज्ञाता-दृष्टा' हैं। पर जिसे वह दुःख पहुँचाती है, उसका प्रतिक्रमण 'हमें' 'बोलनेवाले' से करवाना पड़ता है।

हमें तो कोई गालियाँ दे तो हम जानते हैं कि यह 'अंबालाल पटेल' को गालियाँ दे रहा है, *पुद्‌गल* को गालियाँ दे रहा है। आत्मा को तो जान ही नहीं सकता, पहचान ही नहीं सकता न!

इसलिए हम स्वीकार नहीं करते, 'हम' पर असर नहीं होता। हम वीतराग रहते हैं। हमें उस पर राग-द्वेष नहीं होते।

वाणी रिकॉर्ड है। 'स्थूल संयोग, सूक्ष्म संयोग और वाणी के संयोग पर हैं और पराधीन हैं।' वाणी वह बोलनेवाले के हाथ में भी नहीं है और सुननेवाले के हाथ में भी नहीं है। वाणी के संयोग पर हैं और पराधीन हैं। ऐसी उड़ती हुई आतशबाज़ियों में कौन हाथ डाले?

यश-अपयश में वीतरागता वही रिकॉर्ड

घरवाले या बाहरवाले कड़वा बोले तो सहन नहीं होता, इसलिए हमने कहा है कि वाणी वह 'रिकॉर्ड' है। इस काल में 'रिकॉर्ड' टेढ़ी बजती है। सामनेवाले की कितनी भी कैसी भी रिकॉर्ड बज रही हो, पर हम 'रिकॉर्ड' के रूप में सुनते रहें और सामनेवाला ऊब जाए, तब समझें कि वास्तव में ज्ञान पचा है। कषाय कभी भी कषाय से जीते नहीं जा सकते, कषाय समता से ही जीते जा सकते हैं।

कभी टेपरिकॉर्ड कुछ उल्टा बोलती है, तो हम उसका अपयश लेने के लिए तैयार नहीं होते और सीधा बोलती है उसका यश लेने के लिए तैयार नहीं होते। उसके, टेपरिकॉर्ड के यश-अपयश के हम मालिक नहीं होते। फिर भी उसे अपयश देना हो तो हर्ज़ नहीं और यश देना हो तो भी कहें कि टेपरिकॉर्ड है, क्यों यश देता है? कोई कहेगा, 'बहुत अच्छा बोले' तो वह टेपरिकॉर्ड का है और कोई कहेगा, 'खराब बोला' तो भी वह टेपरिकॉर्ड का है। मेरा कुछ नहीं है उसमें।

रिकॉर्ड किसे कहते हैं कि जिसे अच्छा बोले उसका यश नहीं चाहिए या बुरा बोले उसका अपयश नहीं चाहिए, वह वीतराग है।

यह जाना हुआ काम का, जगत् में जीने के लिए...

तुझे ये सारी बातें पसंद हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ। यहाँ ज्ञान की सारी बातें जानने को मिलती हैं न!

दादाश्री : यह जानो तभी जगत् में जीया हुआ काम का है। वर्ना जिया हुआ भी मरे हुए के बराबर (जैसे) है। ये बाहर जो सभी जीवित घूमते हैं न, वे मरे हुए के समान हैं। पूरा दिन भीतर उलझन में रहते हैं और बेचैन (अकुलाते) रहते हैं। जैसे शकरकंद को भट्टी में रखें तो वह कितनी तरफ से सिकता है।

प्रश्नकर्ता : सभी तरफ से सिकता है।

दादाश्री : उसी तरह सभी मनुष्य सिक रहे हैं।

समझ में आए, तो हल आए

यह वाणी, वह ओरिजनल टेपरिकॉर्ड बजती है, क्या वैसा मानने में आता है?

प्रश्नकर्ता : आता है।

दादाश्री : लेकिन आपके अनुभव की बात कह रहे हो क्या? मैं तो अपने अनुभव की बात कह देता हूँ।

प्रश्नकर्ता : आपके कहने से समझ में आ गया।

दादाश्री : समझ में आ गया? लेकिन आपको अनुभव में नहीं आया कि यह टेपरिकॉर्ड है?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छी तरह से आता है।

दादाश्री : सौ प्रतिशत भरोसा है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सौ प्रतिशत है। और आपने जो बातें की, उसे मैं ठीक से समझ गया।

दादाश्री : समझोगे ही न! यह तो ब्रेन (दिमाग) बहुत तेज़ है और समझने की जबरदस्त शक्ति रखते हैं। लेकिन समझने योग्य बात मिलनी चाहिए न! मिले तो समझेंगे न? मिले तो समझ ही जाते हैं और समझ में आ जाए तो हल आए न! वर्ना हल कैसे आएगा?

हर एक शब्द का ऑल प्रूफ दे, वे ज्ञानी

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि, 'आप इस वाणी को टेपरिकॉर्ड कहते हैं, वह बड़ी जोखिमदारी लेते हैं।' मैंने कहा, 'जोखिमदारी नहीं, लेकिन एक्ज़ेक्ट बोल रहा हूँ'। जोखिमदारी तो कोई व्यक्ति ले ही कैसे?' मुझे कहते हैं कि, 'यह टेपरिकॉर्ड है, ऐसा मत कहो न! वह बात कहना बंद कर दो न! नहीं बोलें तो अच्छा है।' मैंने कहा, 'अभी तक सच्ची बात ही बाहर नहीं आई और नहीं आई, तभी तो यह कह रहा हूँ और वह रोब से कह रहा हूँ। आओ, मेरे साथ रहकर मैं साबित करके दिखाऊँ, छः महीने में।' साबित तो करना ही पड़ेगा न, जो बोला वह तो? और मैं तो कहता हूँ कि 'यह जो सारा बोला गया है अभी तक, अट्ठाईस साल से, उसके हर एक शब्द का प्रूफ देने को तैयार हूँ, एट ऐनी टाइम।' क्योंकि यह वॉटरप्रूफ या फायरप्रूफ नहीं है! ऑल प्रूफ है यह!

यह 'वाणी, वह टेपरिकॉर्ड है', वह प्रूव होगा न, तब सारा हल आ जाएगा। लेकिन यह बात पूरे संसार के लिए काम की नहीं है, मोक्षमार्गी के लिए काम की है और मोक्षमार्गी उलझन में हैं, इसे लेकर, सच्ची हकीकत नहीं जानने के कारण!

'ज्ञानी' का कैसा प्रयोग

हमारे, 'ज्ञानी' के प्रयोग कैसे होते हैं कि हर एक क्रिया को 'हम' 'देखते हैं'। इसलिए मैं इस वाणी को रिकॉर्ड कहता हूँ न! यह रिकॉर्ड बोल रही है उसे देखता रहता हूँ कि 'क्या रिकॉर्ड बज रही है और क्या नहीं!' और जगत् के लोग तन्मयाकार हो जाते हैं। संपूर्ण निर्तन्मयाकार रहे, उसे 'केवलज्ञान' कहा है।

जगत् के लोग देखते हैं, वैसा ये ज्ञानी भी देखते हैं, पर जगत् के लोगों का देखा हुआ काम में नहीं आता। क्योंकि उनका 'बेसमेन्ट' (आधार) अहंकार है। 'मैं चंदूलाल हूँ' वह उसका 'बेसमेन्ट' है। और 'अपना' 'बेसमेन्ट' 'मैं शुद्धात्मा हूँ' है। इसलिए अपना देखा हुआ केवलज्ञान के अंश में जाता है। जितने अंश से हमने देखा, जितने अंश से हमने अपने आप को अलग देखा, वाणी को अलग देखा, ये 'चंदूभाई' क्या कर रहे हैं वह देखा, उतने अंश केवलज्ञान उत्पन्न हुआ।

हमें कोई गालियाँ दे तो वह हमारे ज्ञान में ही होता है, 'यह रिकॉर्ड क्या बोल रही है' वह भी हमारे ज्ञान में ही होता है। रिकॉर्ड गलत बोली हो, वह हमारे ज्ञान में ही होता है। हमें पूरी जागृति रहा करती है और संपूर्ण जागृति, वह केवलज्ञान है। व्यवहार में लोगों को व्यवहारिक जागृति रहती है, वह तो अहंकार के मारे रहती है। पर यह तो शुद्धात्मा होने के बाद की जागृति कहलाती है। यह अंश केवलज्ञान की जागृति है और वहीं से कल्याणकारी है।

भीतर की मशीनरी को ढीली नहीं छोड़ना चाहिए। हमें उसकी देखरेख करनी चाहिए कि कहाँ-कहाँ घिस रही है, क्या होता है, किसके साथ वाणी कठोर निकली। बोले उसका हर्ज नहीं

है, हमें 'देखते' रहना है कि, 'ओहोहो, चंदूभाई कठोरता से बोले!'

प्रश्नकर्ता : पर जब तक नहीं बोला जाता तब तक अच्छा है न?

दादाश्री : 'बोलना-न बोलना' वह अब अपने हाथ में नहीं रहा है।

बाहर का तो आप देखोगे वह बात अलग है, पर आपके ही अंदर का आप सारा देखते रहोगे, उस समय आप केवलज्ञान सत्ता में होओगे। पर अंश केवलज्ञान होता है, सर्वांश नहीं। अंदर खराब विचार आएँ उन्हें देखना, अच्छे विचार आएँ उन्हें देखना। खराब पर द्वेष नहीं और अच्छे पर राग नहीं। अच्छा-बुरा देखने की आपको ज़रूरत नहीं है क्योंकि सत्ता ही मूल अपने काबू में नहीं है। यानी ये सारी गहन बातें हैं। ऐसी बातें शास्त्रों में भी नहीं होती, पुराणों में नहीं कहा, वेदांत में नहीं कहा। ये सारे रहस्य ज्ञानी जानते हैं।

ये मनुष्य बोलते हैं वह भी टेपरिकॉर्ड ही बोल रही है। आपके शब्द को 'रिकॉर्ड' मानोगे और सामनेवाले के शब्द को भी 'रिकॉर्ड' मानोगे तब हल आएगा। दूसरा कोई उपाय इस जगत् को जीतने का नहीं है। 'रिकॉर्ड' कहा, तब फिर निर्दोष हो गए! यह तो विज्ञान है। इसलिए विज्ञान को समझ लेना है। विज्ञान अर्थात् विज्ञान! विज्ञान में कुछ बदलाव नहीं होता। विज्ञान यानी विरोधाभास नहीं! सिर्फ इसे समझ ही लेना है!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

महाराष्ट्र

अमरावती	**दिनांक : 21 जून**	**संपर्क : 9403411471**
दर्यापुर	**दिनांक : 22 जून**	**संपर्क : 7218133513**
शेगांव	**दिनांक : 23 जून**	**संपर्क : 9309954208**
अकोला	**दिनांक : 24 जून**	**संपर्क : 9422403004**
गोंदिया	**दिनांक : 26 जून**	**संपर्क : 9834696634**
कन्हालगांव	**दिनांक : 26 जून**	**संपर्क : 9423175153**
नागपुर	**दिनांक : 27-28 जून**	**संपर्क : 9423257389, 7219825222**

उत्तर प्रदेश

प्रयागराज	**दिनांक : 9-10 जुलाई**	**संपर्क : 9935378914**
वाराणसी	**दिनांक : 11-12 जुलाई**	**संपर्क : 7054302409**
कानपुर	**दिनांक : 12 जुलाई**	**संपर्क : 9140202636**
बदलापुर	**दिनांक : 13 जुलाई**	**संपर्क : 9236518934**
मेरठ	**दिनांक : 13 जुलाई**	**संपर्क : 9027783293**
गोरखपुर	**दिनांक : 14 जुलाई**	**संपर्क : 9935949099**
लखनऊ	**दिनांक : 15-16 जुलाई**	**संपर्क : 8885825819**
आगरा	**दिनांक : 19 जुलाई**	**संपर्क : 9219732860**

बिहार

आरा	दिनांक : 10 जुलाई	संपर्क : 7091140139
पटना	दिनांक : 12 जुलाई	संपर्क : 7352723132

छत्तीसगढ़

रायपुर	दिनांक : 11 जुलाई	संपर्क : 9179025061
भिलाई	दिनांक : 12 जुलाई	संपर्क : 9407982704

उत्तराखंड

देहरादून	दिनांक : 14 जुलाई	संपर्क : 9012279556
हरिद्वार	दिनांक : 15 जुलाई	संपर्क : 9719415074
ऋषिकेश	दिनांक : 16 जुलाई	संपर्क : 9012279556
हल्द्वानी	दिनांक : 18 जुलाई	संपर्क : 9412084002

झारखंड

जमशेदपुर	दिनांक : 14 जुलाई	संपर्क : 9031292567
डाल्टनगंज	दिनांक : 14 जुलाई	संपर्क : 6200738415
हज़ारीबाग	दिनांक : 15 जुलाई	संपर्क : 9798126101
धनबाद	दिनांक : 16 जुलाई	संपर्क : 9835114202
बोकारो	दिनांक : 17 जुलाई	संपर्क : 7765045788
राँची	दिनांक : 19 जुलाई	संपर्क : 9304077199

पश्चिम बंगाल

आसनसोल	दिनांक : 15 जुलाई	संपर्क : 7679186469
कांडी	दिनांक : 16 जुलाई	संपर्क : 9474076718
मालदा	दिनांक : 17 जुलाई	संपर्क : 7908922840
कोलकाता	दिनांक : 19 जुलाई	संपर्क : 9830131411

कर्नाटक

हुबली	दिनांक : 20 जुलाई	संपर्क : 9513216111
बेंगलूर	दिनांक : 23 से 25 जुलाई	संपर्क : 9590979099

गोवा - तमिलनाडु - तेलंगाना

फोंडा	दिनांक : 21 जुलाई	संपर्क : 8698745655
कोयंबटूर	दिनांक : 23 जुलाई	संपर्क : 9843551119
हैदराबाद	दिनांक : 25 जुलाई	संपर्क : 9885058771

समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Atmagnani Pujyashree Deepakbhai's Brazil - USA - Canada Schedule - 2026

USA & Canada: +1-877-505-DADA (3232) Email - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Venue
25-Jun To 28-Jun	Thu To Sun	All Days		**Satsang-Gnanvidhi** Prior Registration Required	**(Brazil)** Marte Hall São Paulo, R. Domingos de Morais, 348 - Vila Mariana, São Paulo - SP, 04010-000, Brazil
4-Jul	Sat	5:30 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(Chicago, IL)** The Westin Chicago Lombard 70 Yorktown Center Lombard, IL 60148
5-Jul	Sun	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
5-Jul	Sun	4:30 PM	8:00 PM	**Gnanvidhi**	
8-Jul	Wed	10:30 AM	12:00 PM	**Experiences with Niruma**	
10-Jul	Fri	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	**(Somerset, NJ)** DoubleTree by Hilton Somerset 200 Atrium Dr Somerset, NJ 08873
10-Jul	Fri	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	
11-Jul	Sat	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
11-Jul	Sat	4:00 PM	7:30 PM	**Gnanvidhi**	
17-Jul	Fri	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	**(Toronto, Canada)** Brampton Triveni Mandir 20 Daviselm Drive Brampton, ON L6X 0E6
18-Jul	Sat	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
18-Jul	Sat	4:30 PM	8:00 PM	**Gnanvidhi**	
23-Jul	Thu	6:00 PM	7:30 PM	**Satsang**	**(Atlanta, GA)** Shakti Mandir 1450 Huie Road Lake City, GA 30260
24-Jul	Fri	11:00 AM	12:30 PM	**Aptaputra Satsang**	
24-Jul	Fri	5:30 PM	9:00 PM	**Gnanvidhi**	
28-Jul	Tue	10:30 AM	12:30 PM	**Satsang**	**Gurupurnima (Jacksonville, FL)** Hyatt Regency Jacksonville Riverfront 225 E Coastline Dr Jacksonville, FL 32202
28-Jul	Tue	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
29-Jul	Wed	8:00 AM	9:30 AM	**Guru Pujan, Aarti, GP message**	
29-Jul	Wed	10:00 AM	12:30 PM	**Gurupurnima Darshan**	
29-Jul	Wed	4:30 PM	7:00 PM	**Gurupurnima Darshan**	
29-Jul	Wed	9:00 PM	10:00 PM	**Live Bhakti**	
30-Jul	Thu	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
30-Jul	Thu	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
31-Jul	Fri	10:00 AM	12:30 PM	**Pran Pratishtha of Small Idols of Simandhar Swami**	
31-Jul	Fri	5:00 PM	7:00 PM	**Satsang**	
1-Aug	Sat	10:00 AM	12:30 PM	**Satsang**	
1-Aug	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**Gnanvidhi**	
2-Aug	Sun	10:30 AM	12:00 PM	**Satsang**	
6-Aug	Thu	7:00 PM	9:00 PM	**Satsang**	**(Dallas, Texas)** Four Points by Sheraton Dallas Fort Worth Airport North 1580 Point W Blvd Coppell, TX 75019
7-Aug	Fri	10:30 AM	12:00 PM	**Aptaputra Satsang**	
7-Aug	Fri	6:30 PM	10:00 PM	**Gnanvidhi**	

अडालज : आप्तसंकुल में विशेष भक्ति : ता. 1 मई 2026

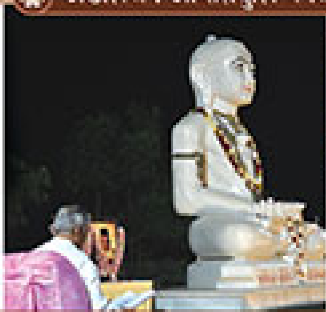
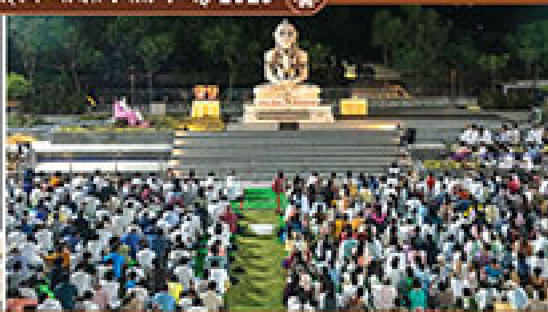

अडालज : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 2-3 मई 2026

सूरत : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 8 से 11 मई 2026

स्वागत

सांस्कृतिक कार्यक्रम

पूज्यश्री दीपकभाई का 74वाँ जन्मदिन का उत्सव

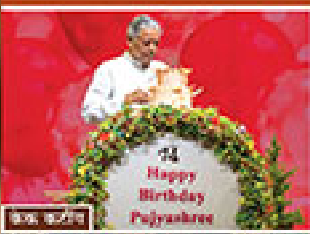

केक कटींग

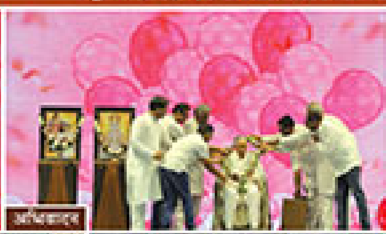
अभिवादन

महात्माओं के आशीर्वाद लेते हुए पूज्यश्री

सत्संग-ज्ञानविधि

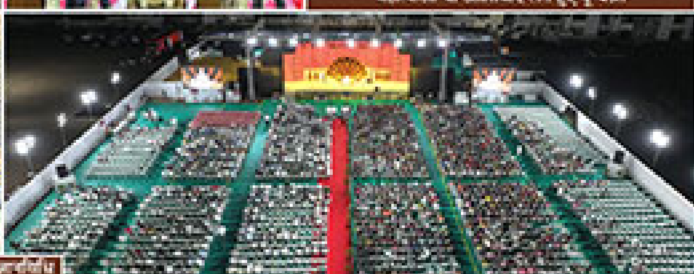

जून 2026
वर्ष-21 अंक-8
अखंड क्रमांक - 248

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

यह करामात तो देखो

इस दुनिया में कोई भी जीव आत्मा के रूप में कुछ भी बोल नहीं सकता। चेतन (आत्मा) बोल सके, ऐसा नहीं है। जीवमात्र (ओरिजिनल) टेपरिकॉर्ड के आधार पर ही बोलता है। सब के पास टेपरिकॉर्ड है। गधे का भी टेपरिकॉर्ड होता है, वर्ना वह होंची-होंची उसी स्वरूप में नहीं बोल पाता, एक ही प्रकार का सुर नहीं निकलता। यदि ओरिजिनल टेपरिकॉर्ड न हो, तो गधा फिर से बोलेगा तो अलग ही तरह से बोलेगा, तीसरी बार बोलेगा तो अलग तरह से बोलेगा, आवाज़ बदलती रहेगी। लेकिन इसे तो हम जब भी सुनते हैं न, तब उसी तरह की आवाज़, ज़रा भी फ़र्क नहीं होता, एक ही क्वालिटी होती है। कल जैसा बोल रहा था, वैसा ही एक्ज़ेक्ट बोलता है, गलती नहीं होती। गधा पिछली बार जैसा रेंका था और अभी रेंका, उसमें क्यों फर्क नहीं पड़ता? यह (ओरिजिनल) टेपरिकॉर्ड ही है, वैसी की वैसी ही बजती रहती है।

- दादाश्री

DBF • Adalaj

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol. Dist. Gandhinagar – 382729.